गुल्लक

अंक - 1

फरवरी - 2023

बिहार सरकार

महिला सशक्तिकरण नीति रंग लाई

अगुआ बना बिहार

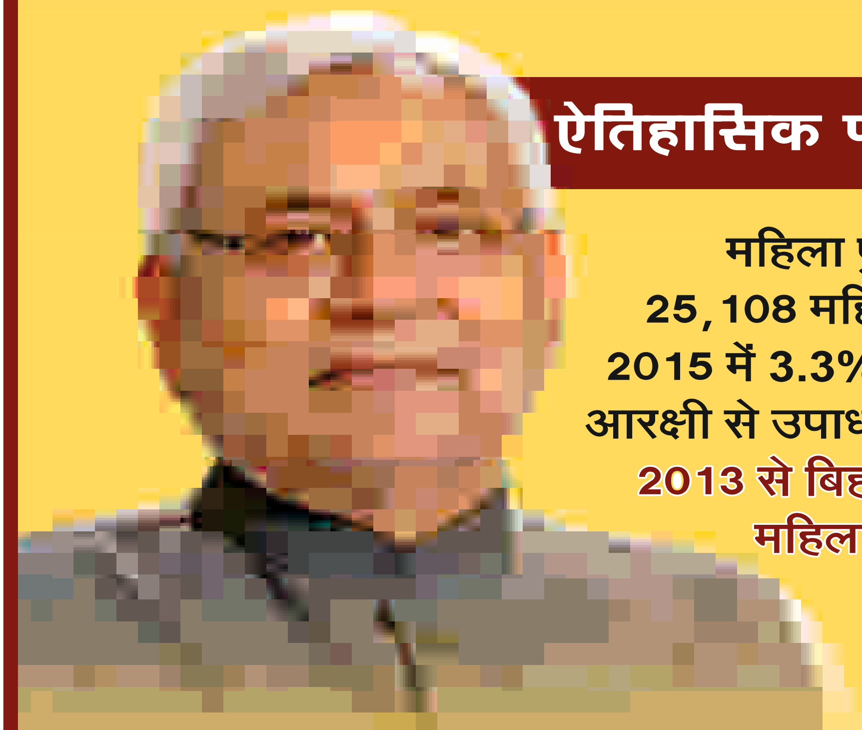

ऐतिहासिक पहल

महिला पुलिस बल में देश में नं 1
25,108 महिलाएं पुलिस बल में कार्यरत।
2015 में 3.3% और अब 25% हिस्सेदारी है।
आरक्षी से उपाधीक्षक पद पर महिलाएं कार्यरत।
2013 से बिहार में पुलिसभर्ती में 37% पद महिलाओं के लिए आरक्षित।

पुलिस बल में महिलाओं की संख्या (प्रतिशत में)

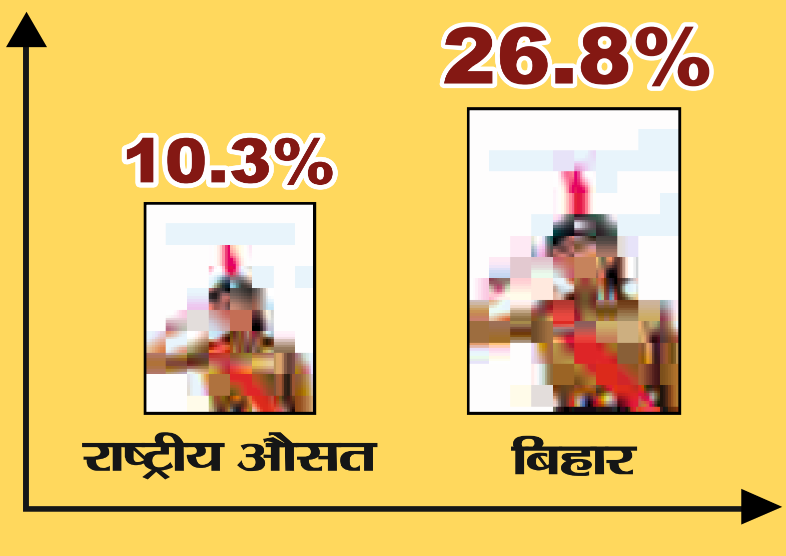

गुल्लक

अंक – 1 **फरवरी 2023**

महिला एवं बाल विकास निगम द्वारा
प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका

प्रधान संपादक

श्रीमती हरजोत कौर बम्हरा

संरक्षक

श्री अजय कुमार श्रीवास्तव
श्री राजीव वर्मा

संपादकीय टीम

अविनाश उज्ज्वल
महालक्ष्मी कुमारी
राजेश कुमार प्रज्ज्वल

संकलन, संपादन, शोध एवं डिजाइन

इक्विटी फाउंडेशन
पटना

संकल्पना

बाल्यावस्था में बच्चों की बाल सुलभ मनोवृत्तियाँ, उनकी चंचलता, उनकी कोमल आकांक्षाएं और जिज्ञासाओं की एक अलग ललक होती है। नित्य नई चीजों के बारे जानना चाहते हैं। बाल साहित्य ऐसे में बहुत मददगार साबित होता है। बाल साहित्य बच्चों के मानसिक विकास की रूपरेखा तैयार करता है। उनके मन के ललक को जागृत करता है और उन्हें कल्पना के पंखों के सहारे उड़ना सिखाता है। बाल साहित्य स्वस्थ समाज का निर्माण करने में मदद करता है। आज के हमारे यही बच्चे कल चांद पर, अंतरिक्ष में और ग्रहों की यात्रा करेंगे।

एक समय था जब बच्चों में बाल पत्रिका का क्रेज था और अख़बारों में भी बाल साहित्य छपते थे। परन्तु ये चिंताजनक है कि आज के बच्चे बाल पत्रिका के प्रति उदासीन हैं और अख़बारों में भी बाल साहित्य बहुत कम ना के बराबर प्रकाशित होता है। बच्चे बाल साहित्य की जगह आज लैपटॉप, टेबलेट और मोबाइल में उलझ कर रह गये हैं। इसके परिणामस्वरूप बच्चे समय से पहले बड़े हो रहे हैं। साथ ही वे चिड़चिड़े, जिद्दी, क्रोधी और हिंसक भी बन रहे हैं। बच्चों की दिनचर्या असंतुलित हो गई है, ना समय से सोते हैं और ना ही समय से जागते हैं, ना व्यायाम और योग करते हैं। जिसके कारण असमय ही अनेक शारीरिक और मानसिक अवसाद का शिकार हो रहे हैं। विशेषकर जिनके माता–पिता नौकरीपेशा हैं, उनके पास लैपटॉप और कंप्यूटर घर में मौजूद है लेकिन बच्चा अन्दर से अकेला है। ऐसे में यदि वह बाल कविता और कहानी पढ़ता है तो उसको ऐसा अहसास होता है जैसे कोई साथी मिल गया है। चरित्र निर्माण एवं नैतिक शिक्षा के लिए भी आज के दौर में बाल साहित्य की अति आवश्यकता है, जो कि बाद में अभिव्यक्ति को आधार प्रदान करती है।

अभिभावकों का भी यह फर्ज है कि बच्चों में बाल साहित्य पढ़ने की आदत डाली जाये। यही आदत आगे भी बच्चों को साहित्य से जोड़कर रखेगी। आजकल के बच्चों को साहित्य एवं किताबों में रुचि जगाना कहीं ना कहीं से माता–पिता के व्यवहारों में ही निहित है।

इसी को ध्यान में रख कर महिला एवं बाल विकास निगम के द्वारा त्रैमासिक बाल पत्रिका **"गुल्लक–ज्ञान का पिटारा"** का प्रकाशन शुरू किया गया है। इस पत्रिका को 9–12 उम्र के बच्चों को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है। इसका प्रस्तुतीकरण मनोहर शैली में किया गया है। ऐसी भाषा शैली का प्रयोग किया गया है कि बच्चों को आसानी से समझ में आये। इस बाल साहित्य का लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रख कर किया गया है, जिसमें इतिहास, कला, विज्ञान, दर्शन पर कहानियों, कविताओं, पत्रों, यात्रा–वृतांतों और गैर–काल्पनिक लेखों के माध्यम से बाल मन की दुनिया और उनकी जिज्ञासा को सम्बोधित करने का प्रयास किया जाएगा। मनोरंजक तरीकों से बच्चों को शिक्षित किया जाएगा।

❖❖❖

हमारा पन्ना

बेटा–बेटी एक समान– मितवा

कविता– सतरंगी लड़कियां

स्वास्थ्य– बेटी करे सवाल

प्रेरक प्रसंग– अरूणिमा : बहादुर बेटी के साहस की कहानी

देशांतर– घर का सपना

विज्ञान वार्ता– सूर्य से पहले भी था प्रकाश

आविष्कार– टेलीफोनः बेल से सेल तक

बिहार की लोक कथा– स्वप्न वृक्ष

सोचो–सीखो– तीन कविताएं

चित्रकथा– कूल–कूल समर फूड

चलचित्र– भारत में ऐसे आई पहली फिल्म

साइबर कथा– रहस्यमयी साइबर मित्र

पर्यटन– तख्त श्री हरमंदिर साहब

बतकही बिहार की–

मैं बिहार हूं

बिहार विधानसभा की पहली बैठक

गोल–गोल गोलघर

महात्मा गांधी सेतु

वैशाली

साभार

एकलव्य प्रकाशन

अमरचित्र कथा

लोटपोट

storyweaver.org.in

google.com

मितवा

● **कमला भसीन**

मैं पंजाब के एक सिख परिवार की बेटी हूं। मेरी उम्र 20 साल है। हम एक गांव में रहते हैं। यहां ज्यादातर परिवार खेती करते हैं। कुछ किसान बहुत अमीर हैं। उनके बड़े–बड़े खेत हैं, कई ट्रैक्टर हैं। फसल काटने की बड़ी–बड़ी मशीनें भी हैं।

मेरे पिताजी भी किसान हैं। न बड़े, न छोटे। मेरी मां भी किसान हैं। हल चलाने के अलावा मां खेत पर सब काम करती हैं, जैसे पानी देना, बीज बोन, कटाई करना। सबसे बड़ा काम जो मां करती हैं, वो है फसलों से दोस्ती और प्यार करना।

मेरा नाम है मितवा, यानी प्यारी दोस्त। मां ने मुझे यह नाम दिया था। जब मैं पैदा हुई तो मां को लगा उनकी सहेली आ गई है। मन की मीत आ गई है। मैं मां की मितवा, मां मेरी मितवा। मेरे दो वीरजी हैं– दलजीत और मनजीत।

आज मैं सोचती हूं कि मेरी किस्मत अच्छी थी कि मुझसे पहले दो भाई हैं। अगर दो बहनें होतीं तो मैं पैदा ही नहीं होती। हमारे गांव में कई बेटियों को पैदा होने से पहले ही मार देते हैं। इसलिए यहां लड़कियां कम हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि लोग लड़कियों से क्यों नफरत हैं, उन्हें लड़कों से कम क्यों समझते हैं।

मेरे पिताजी मुझे प्यार तो करते थे लेकिन उन्हें अपना प्यार दिखाना नहीं आता था। वो अधिकार ज्यादा दिखाते थे, प्यार कम। शायद पिताजी दोनों वीरजी को ज्यादा प्यार करते थे। वे उन्हें अपने साथ रखते थे, बाहर ले जाते थे, ज्यादा आजादी देते थे।

वैसे पिताजी उनको डांटते भी खूब थे। पिताजी से हम सबको डर लगता था। सबसे ज्यादा धौंस वो मां पर जमाते थे। वे मां को साथी नहीं दासी समझते थे। मां पिताजी को कुछ नहीं कहती थीं। मुझसे बात करके मां अपन मन हल्का कर लेती थीं।

मैंने पास के गांव के सरकारी स्कूल से 12वीं क्लास पास की। मुझे स्कूल तो भेजा गया मगर उसके अलावा बाहर जाने की, बाहर खेलने की आजादी नहीं दी गई। पिताजी कहते थे, ''शरीफ लड़कियां बाहर नहीं जातीं।'' मैं मन ही मन कहती, ''हां, सिर्फ बदमाश लड़के बाहर घूमते हैं।'' उनकी वजह से लड़कियों को घर में बंद रहना पड़ता है।

साइकिल चलाना मैंने चोरी–चोरी मनजीत वीरजी से सीखा। मेरे यह भाई बहुत ही कोमल दिल के हैं, नम्र हैं। वे मुझे अपने से कम नहीं समझते।

दो साल पहले पिताजी ने एक ट्रैक्टर खरीदा था। दोनों वीरजी जल्दी ही ट्रैक्टर चलाना सीख गए। उन्हें ट्रैक्टर चलाते देख पिताजी बहुत खुश होते। मेरा भी बहुत मन था ट्रैक्टर सीखने का। मैं 18 साल की थी। स्वस्थ थी। मगर पिताजी ने कह दिया, ''लड़कियां ट्रैक्टर नहीं चलातीं।'' यह सुनकर मेरा मन बहुत दुखा मगर पिताजी की बात ठीक हो या गलत, माननी ही पड़ती थी।

मगर अब पिताजी बहुत बदल गए हैं। मैं बताती हूं यह बदलाव क्यों और कैसे आया।

सात–आठ महीने पहले एक दिन अचानक पिताजी को दिल का दौरा पड़ा। दोनों वीरजी किसी काम से उस दिन शहर गए थे। घर पर सिर्फ मां, दो खेत मजदूर और मैं थे।

हमारे गांव में कोई अच्छा डॉक्टर नहीं है। बड़ा

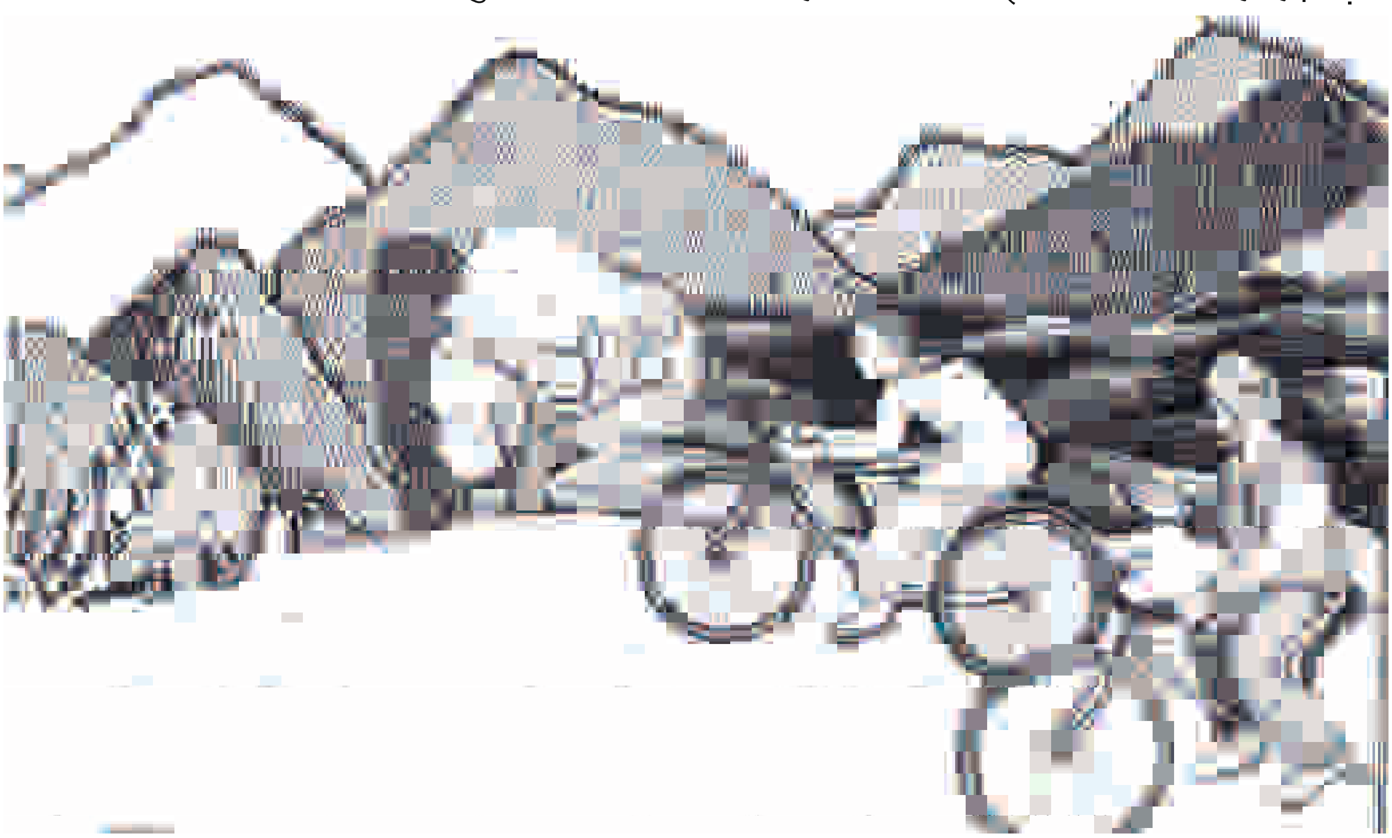

सरकारी अस्पताल पांच किलोमीटर दूर है। पिताजी की हालत तेजी से बिगड़ रही थी। उनका तुरंत अस्पताल पहुंचना बहुत जरूरी था। बेहद डरी हुई और निराश आवाज में पिताजी बुदबुदाए, ''इस वक्त मेरे बेटे यहां होते तो शायद मेरी जान बच जाती!'' बोलते–बोलते वे बेहोश हो गए।

हालात को संभालते हुए, मैंने मां और दोनों मजदूरों से कहा, ''जल्दी से पिताजी की मंजी को ट्रैक्टर–ट्रॉली में रखते हैं। उन्हें अस्पताल ले जाना है।'' वे तीनों हैरान थे, मगर उन्होंने वही किया, जो मैंने कहा।

बिना देर किए हम अस्पताल पहुंच गए। खुशकिस्मती से दिल के डॉक्टर वहां मौजूद थे। पिताजी का इलाज तुरंत शुरू हो गया। डर से हमारी जान निकल रही थी। पर जल्दी ही उनकी हालत संभल गई। और हम सब की सांस में सांस आई।

पिताजी को होश आने पर मां और मैं उनके कमरे में गए। पिताजी ने आंखें खोलीं, हमें देखा और धीमी आवाज में मां से पूछा, ''मैं अस्पताल कैसे पहुंचा? कौन लाया मुझे यहां?''

मां ने उनके हाथ पर हाथ रखकर मुस्कुराते हुए कहा, ''मितवा! ट्रैक्टर चलाकर यही आपको यहां लाई।''

''मितवा लाई? वो कैसे लाई? उसे तो ट्रैक्टर चलाना नहीं आता।'' बहुत हैरान थे पिताजी।

मां ने कहा, ''मितवा ने चोरी से ट्रैक्टर चलाना सीखा। मनजीत ने सिखाया। वाहे गुरु का शुक्र है कि मितवा ने आपका हुकुम नहीं माना। और आप की जान बच गई।''

स्वर्गीय कमला भसीन 1970 से लेकर अपने अंतिम दिनों तक मानव अधिकारों, स्त्री समानता, सतत विकास जैसे मुद्दों पर काम करती रहीं। उन्होंने 27 साल तक संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से भी काम किया। वे बच्चों के लिए भी खूब लिखती रहीं। कमला अपने पीछे अपने धारदार विचारों, लेखों, वीडियो, गीतों और प्यार भरी दोस्तियों का एक खजाना छोड़ गई हैं– जिनके जरिये वे आज भी हमारे बीच हैं।
चित्र : शिवांगी

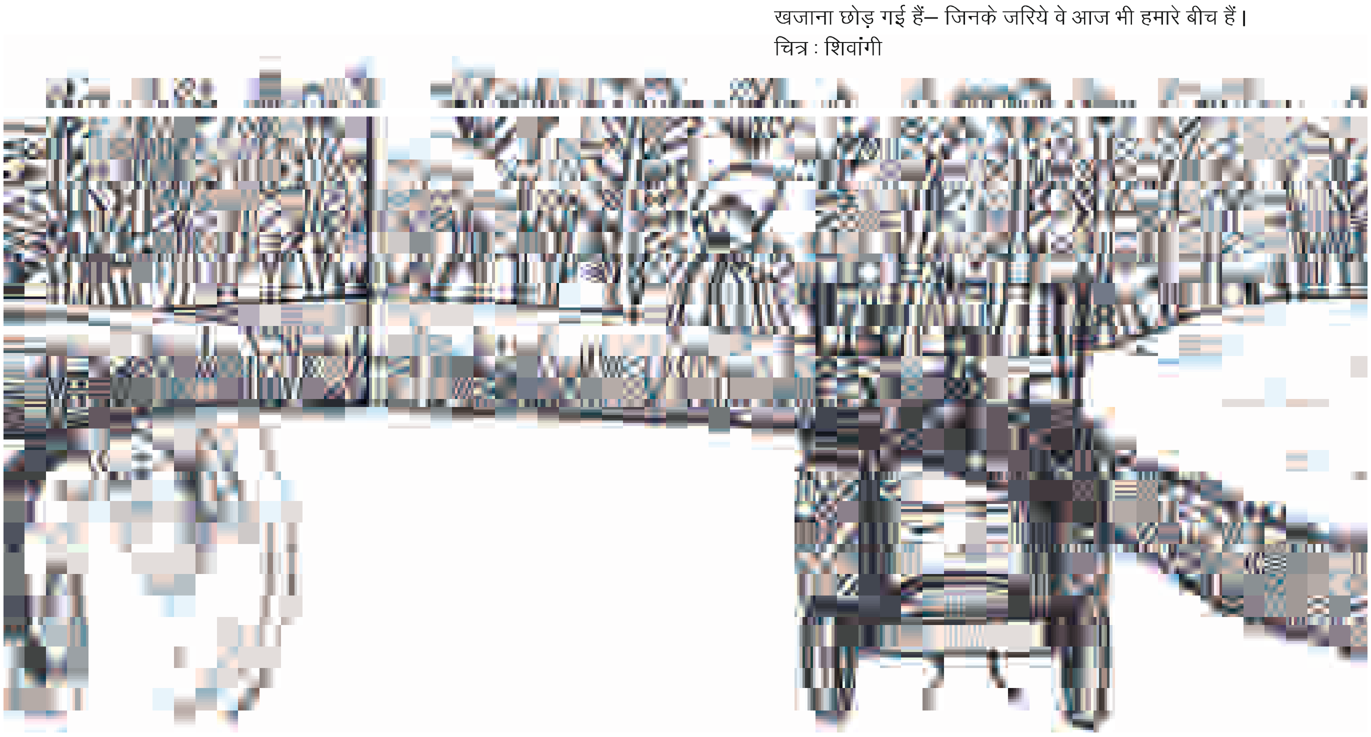

सतरंगी लड़कियाँ

क्या सब लड़कियाँ एक जैसी होती हैं?
या सब लड़कियों को एक जैसा होना चाहिये?
सब एक जैसी हो जाये तो कितना बोरिंग होगा!

कुछ घघरी या लहँगे
में होती हैं।

कुछ लड़कियाँ फ्रॉक
पहनती हैं।

कुछ तो अपने पिताजी
का कुर्ता चढ़ा लेती हैं।

कुछ लड़कियों को घर में रहना,
पिताजी की गोदी में बैठना पसन्द है।

कुछ नेकर या शॉर्टस
में चहकती हैं।

कुछ को घर से भगना पसन्द है।
उनका मन तो खेल के मैदान में ही लगता है।

कुछ लड़कियाँ ऐसी दिखती हैं।
कुछ न ऐसी न वैसी, वो कुछ और ही दिखती हैं।

इन्हें सजना-धजना पसन्द है।

इनके पास न सजने-धजने का वक्त है, न शौक।
ये तो फटे कपड़ों और बिखरे बालों में मस्त हैं।

लड़कियां कभी-कभी शांत होती हैं।
पर कभी-कभी वे नटखट और शरारती भी होती हैं।

और लड़कियों को कभी-कभी बहुत गुस्सा आता है।

और वे खूब चिल्लाती हैं।

कुछ के बाल
हैं लम्बे।

और ये?
ये तो गंजी है।
वाह!

इनको पेड़ों पर
चढ़ना पसन्द है।

कुछ के बाल
हैं छोटे।

और इनको? इन्हें किसी पर भी बैठ कर
घूमना पसन्द है। साइकिल, घोड़ा, गधा, कुछ भी।

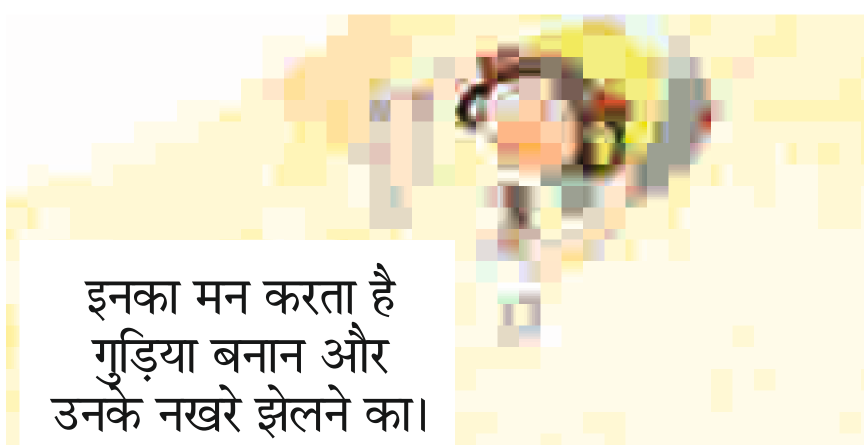

इनका मन करता है
गुड़िया बनान और
उनके नखरे झेलने का।

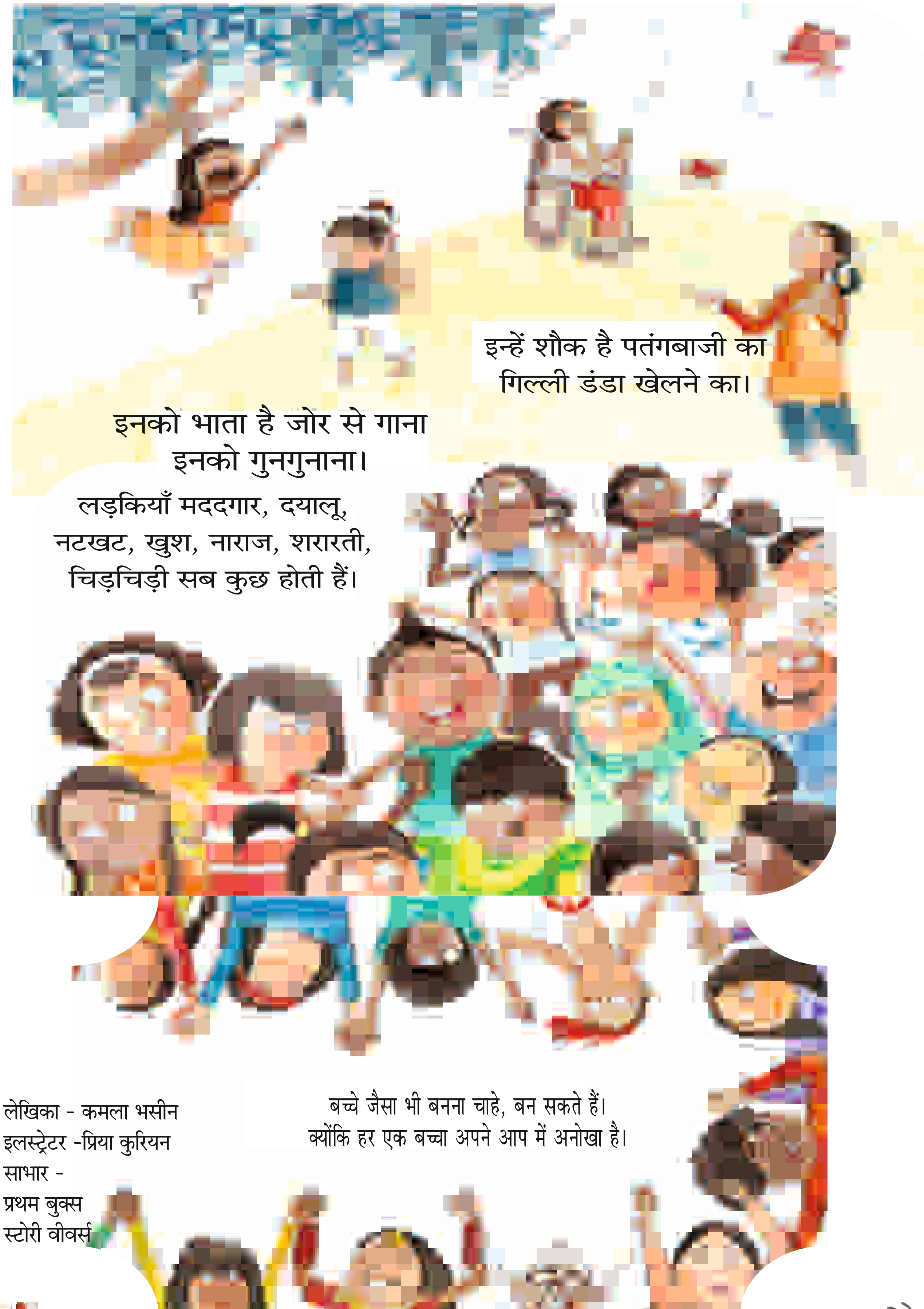

इन्हें शौक है पतंगबाजी का
गिल्ली डंडा खेलने का।

इनको भाता है जोर से गाना
इनको गुनगुनाना।

लड़कियाँ मददगार, दयालू,
नटखट, खुश, नाराज, शरारती,
चिड़चिड़ी सब कुछ होती हैं।

बच्चे जैसा भी बनना चाहे, बन सकते हैं।
क्योंकि हर एक बच्चा अपने आप में अनोखा है।

लेखिका - कमला भसीन
इलस्ट्रेटर -प्रिया कुरियन
साभार -
प्रथम बुक्स
स्टोरी वीवर्स

माहवारीः सवाल और समस्याएं

'बेटी करे सवाल'

● अनु गुप्ता

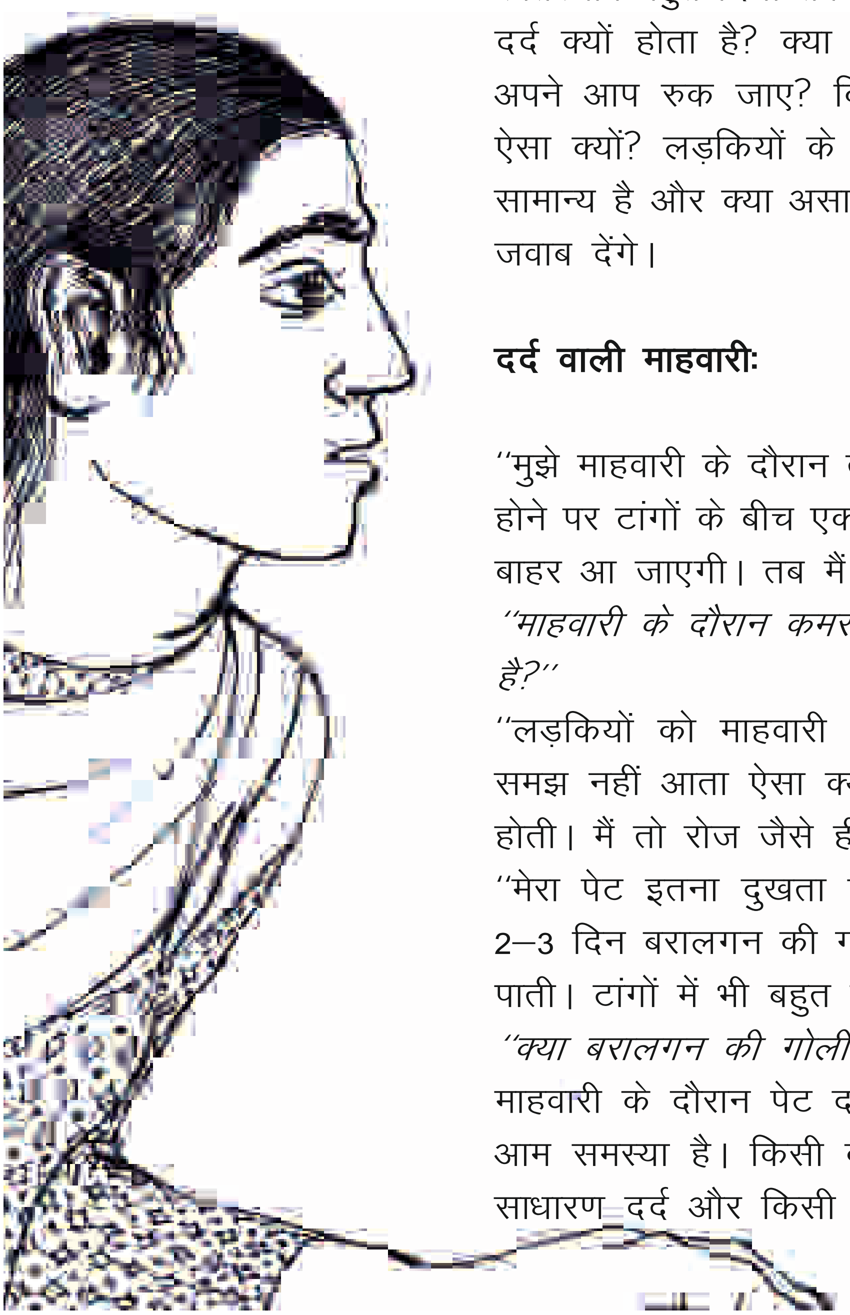

माहवारी कभी–कभी समय से पहले ही क्यों आ जाती है? कई बार रक्तस्त्राव बहुत दिनों तक चलता है, ऐसा क्यों? माहवारी के दौरान दर्द क्यों होता है? क्या ऐसा भी होता है कि माहवारी अचानक अपने आप रुक जाए? किसी–किसी को माहवारी होती ही नहीं, ऐसा क्यों? लड़कियों के इस तरह के कई सवाल होते हैं। क्या सामान्य है और क्या असामान्य? यहां हम ऐसे ही कुछ सवालों का जवाब देंगे।

दर्द वाली माहवारीः

''मुझे माहवारी के दौरान तेज कमर दर्द होता है। कभी–कभी खड़े होने पर टांगों के बीच एक दबाव सा लगता है, जैसे कि बच्चादानी बाहर आ जाएगी। तब मैं बैठने में आराम महसूस करती हूं।''

''माहवारी के दौरान कमर दर्द, पेट दर्द व टांगों में दर्द क्यों होता है?''

''लड़कियों को माहवारी में इतनी तकलीफ होती है। मुझे कभी समझ नहीं आता ऐसा क्यों होता है। मुझे तो कोई परेशानी नहीं होती। मैं तो रोज जैसे ही काम करती हूं।''

''मेरा पेट इतना दुखता है कि बिल्कुल लोट–पोट हो जाती हूं। 2–3 दिन बरालगन की गोली लेकर निकालती हूं। स्कूल नहीं जा पाती। टांगों में भी बहुत दर्द होता है।''

''क्या बरालगन की गोली के कुछ दुष्प्रभाव हैं?''

माहवारी के दौरान पेट दर्द, कमर दर्द व टांगों में दर्द होना एक आम समस्या है। किसी को थोड़ी सी बेचैनी होती है, किसी को साधारण दर्द और किसी को तेज दर्द होता है। दर्द के समय में

भी भिन्नता पाई जाती है। कुछ को माहवारी आने के पहले तकलीफ होती है और स्त्राव शुरू होने पर खत्म हो जाती है, तो कुछ को श्राव शुरू होने के बाद दर्द होता है।

क्यों होता है यह दर्द? माहवारी के दौरान गर्भाशय में बनी परत टूटती है। टूटती परत और रक्त को बाहर धकेलने के लिए गर्भाशय को सिकुड़ना या संकुचित होना पड़ता है। इसी टूटने या सिकुड़ने की वजह से कुछ तकलीफ होना स्वाभाविक है। यदि उस समय कब्ज है, पेट में गैस है तो दर्द बढ़ जाता है। यदि स्त्राव में खून की गांठें हैं तब भी उन्हें बाहर धकेलने में दर्द बढ़ जाता है। दर्द के और भी जटिल कारण हो सकते हैं।

मामूली व साधारण दर्द में आगे दिए गए उपचार मदद कर सकते हैं। तुम इन्हें आजमा सकती हो। लेकिन यदि तुम्हें हमेशा इतना तेज दर्द होता है कि तुम घर के काम नहीं कर पाती, स्कूल नहीं जा पाती, या दर्द एक दिन से ज्यादा रहता है तो तुम्हें डॉक्टर की सलाह ले लेनी चाहिए। इसे दबाना या सहन करते हुए टालना नहीं चाहिए। ये दर्द कोई और जटिल समस्या का लक्षण भी हो सकता है।

घरेलू उपचार

1. माहवारी में दर्द कई बार कब्ज के कारण होता है। कब्ज मिटाने के लिए माहवारी आने के 1–2 दिन पहले रात को सोने से पूर्व 3 ग्राम त्रिफला चूर्ण कुनकुने पानी के साथ ले लो। त्रिफला चूर्ण घर पर भी बना सकते हैं या बाजार से खरीद सकते हैं। यदि घर पर बनाना हो तो आंवला, बहेड़ा और हर्र के समान भाग को कूटकर पीस लें।

2. माहवारी में दर्द होने का एक कारण कैल्शियम की कमी हो सकती है। कैल्शियम की इस कमी को दूर करने के लिए यहां दो नुस्खे दे रहे हैं।

– मेथी दाने को बारीक पीस लो। 5 ग्राम या आधा चम्मच मेथी दाने के चूर्ण को एक कप दूध और दो चम्मच देसी घी के साथ तीन माह तक रोज, दिन में दो बार लो।

– मसूर के एक दाने के बराबर चूना लेकर उसके चारों ओर गुड़ लपेटकर चने के एक दाने के बराबर गोलियां बना लो। चूना जीभ को काट सकता है। इसलिए गोली इस तरह बनाओ कि चूना भीतर की ओर हो और गुड़ इसके ऊपर। दिन में दो–तीन बार गुड़–चने की गोली ले सकती हो।

– माहवारी के दौरान यदि पेट में अधिक गैस हो तब भी दर्द हो सकता है। चुटकी भर हींग को गरम पानी में मिलाकर पीने से गैस से आराम मिलता है।

सिकाई, मालिश और योगासन

– माहवारी के दौरान गरम पानी से स्नान लेने पर और पेट व कमर पर गरम पानी से सिकाई करने से या फिर खड़े नमक को गरम करके उसकी पोटली से सिकाई करने से आराम महसूस होगा। सिकाई से मांस–पेशियों में तनाव कम हो जाता है।

–भुजंगासन, मार्जारि आसन व शशांकासन को दिन में 2–2 मिनट के लिए दो–तीन बार कराने से भी पेट व कमर के दर्द में भी फायदा होता है।

योगासन खाली पेट या भोजन के 2 घंटे के बाद करना चाहिए।
—यदि कमर में दर्द हो तो पेट के बल लेटकर किसी से हल्के से कमर दबवाने से बहुत आराम मिलेगा।
—धीरे—धीरे सैर करने से, कुछ गरम चीज पीने से या पेट को हल्के से मलने से कुछ आराम मिल सकता है।

होमियोपैथिक व बायोकैमिक उपचार

— मैग फॉश 200 की चार गोलियां दिन में में चार बार लो। यह पेट के फूलने, गैस व मरोड़ पड़ने में उपयोगी रहती है।
—चायना 200 की चार गोलियां दिन में चार बार लो। यदि रक्त स्त्राव बहुत अधिक हो, बार—बार हो, दर्द बहुत हो और खून के थक्के गिरते हों तो यह लाभदायक है।

कुछ हिदायतें:

—अपनी तकलीफ के हिसाब से ऊपर बताई गई दोनों में से कोई एक दवा लेनी चाहिए।
—इन दवाओं को मुंह में रखकर चूसना चाहिए। दवा लेने के पहले मुंह साफ होना चाहिए।
—दवा लेने के आधा घंटा पहले और बाद में कुछ न खाओ तो बेहतर होगा।
—एक खुराक से आराम न पड़े तो 15—20 मिनट के बाद फिर से दवा ले सकते हैं।

बायोकेमिक कॉम्बिनेशन की नंबर 15 की चार गोलियां दिन में चार बार लेने से आराम मिलता है। बायोकेमिक कॉम्बिनेशन नंबर 15 कैल फॉस, काली फॉस, मैग फॉस, काली सल्फ, फेरम फॉस नामक लवणों का मिश्रण है।
(होमियोपैथिक व बायोकैमिक दवाएं आपके शहर में होमियोपैथिक दवाखानों और दुकानों पर आसानी से मिल सकती हैं।)

आयुर्वेदिक दवाएं

कुमारी आसव— छह चम्मच आसव में छह चम्मच पानी मिलाकर दिन में दो बार लो। यह दवा करीब एक माह तक लेना चाहिए।
रज प्रवर्तनी वटी— दो गोली, दिन में दो बार माहवारी शुरू होने के पहले से लो।

ऐलोपैथिक दवाएं

माहवारी के दौरान दर्द के लिए हम कई तरह की दवाएं लेते हैं, जैसे कि बरालगन, एनालजिन, औग्जेलजिन, अल्ट्राजिन, नवालजिन आदि। इन दवाओं से आराम तो काफी मिलता है लेकिन कुछ अध्ययनों में देखा गया है कि इन दवाओं का सेवन करने वाले हर 30 से 60 हजार लोगों में से एक को कोई खास तरह की तकलीफ हो सकती है। इनके बजाय माहवारी के दर्द के लिए ज्यादा सुरक्षित दवाओं का उपयोग किया जाता है, जैसे आयब्रुफेन, नैप्रॉक्सिन, पैंटाकोसिन, डैक्स्ट्रो प्रोपॉक्सीफीन।

(डॉ. मीनू शरण की चिकित्सकीय सलाह के अनुसार)

अरुणिमा

बहादुर बेटी के साहस की कहानी

अरुणिमा सिन्हा माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय विकलांग महिला है जिन्हें पहले वॉलीबॉल खिलाड़ी के रूप में जाना जाता था। उन्हें भारत में प्रेरणा का प्रतीक माना जाता है जिन्होंने पैर के बिना माउंट एवरेस्ट जीता। माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई 29,002 फीट है।

अरुणिमा सिन्हा का जन्म 20 जुलाई, 1988 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने अपने पिता को तीन साल की उम्र में खो दिया। उनको बचपन से ही खेल में रुचि थी इसलिए वह एक राष्ट्रीय वॉलीबॉल खिलाड़ी बन गईं। अरुणिमा की मेहनत में कोई कमी नहीं थी, और उनके घर वालों को भी यकीन था कि एक दिन अरुणिमा अपना सपना जरूर पूरा कर लेगी, लेकिन जरूरी नहीं जैसा सोचे वैसा ही किस्मत भी चाहे। एक दुर्घटना ने नाटकीय रूप से उनका जीवन बदल दिया।

12 अप्रैल साल 2011 की रात जब अरुणिमा सिन्हा पद्मावती एक्सप्रेस से लखनऊ से दिल्ली आ रही थी, उसी दौरान रात में कुछ चोरों ने ट्रेन पर हमला कर दिया और अरुणिमा की सोने की चेन खींचने की कोशिश की। जब अरुणिमा ने उनका विरोध किया तो उन चोरों ने अरुणिमा को चलती ट्रेन से फेंक दिया। ट्रेन से गिरने से अरुणिमा का एक पैर ट्रेन के नीचे आ गया। वह पूरी रात ट्रेन ट्रैक पर पड़ी थी, और 49 से अधिक ट्रेनें उनके पैर पर से जा रही थीं लेकिन वह खुद को बचाने में असमर्थ थीं। सुबह में, ग्रामीण उन्हें अस्पताल ले गए और डॉक्टर ने उनकी जान बचाने के लिए घुटने के नीचे से उनका पैर काट दिया।

उन्हें आगे के इलाज के लिए ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स), दिल्ली में लाया गया और संस्थान में उन्होंने चार महीने बिताए। अरुणिमा को कृत्रिम पैर लगाया गया था और फुल बेड रेस्ट की सलाह दी गई थी। अरुणिमा के परिवार को लग रहा था कि शायद उनकी बेटी का भविष्य अब अंधकार में है क्योंकि वो विकलांग हो चुकी है। अरुणिमा अब वालीबॉल तो नहीं खेल सकती थीं। लेकिन इस बीच उनके मन में माउंट एवरेस्ट चढ़ने की इच्छा जागृति होने लगी। क्योंकि अरुणिमा उन सब लोगों को जवाब देना चाहती थी जिन्हें लगता था कि अब शायद वो जिंदगी में कुछ नहीं कर पाएगी। उनके इस फ़ैसले को सुनकर, डॉक्टरों और अन्य लोगों को लगा कि उनके दिमाग में समस्या है। लेकिन वह वास्तव में दृढ़ थीं और चाहती थीं कि सपना वास्तविकता में बदल जाए। अस्पताल से निकलने के बाद वह पहली भारतीय महिला माउंट एवरेस्ट विजेता बछेन्द्री पाल के पास गयी। बछेंद्री पाल ने भी अरुणिमा की हालत को देखते हुए उन्हें ट्रेनिंग देने से इंकार कर दिया। लेकिन फिर उन्हें भी अरुणिमा की जिद के आगे घुटने टेकने पड़े। बछेंद्री पाल के निरीक्षण में अरुणिमा ने अपनी ट्रेनिंग पूरी की और 21 मई 2013 को दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट को फतह कर एक नया इतिहास रचते हुए ऐसा करने वाली पहली विकलांग भारतीय महिला होने का रिकार्ड अपने नाम कर लिया। 2015 में, अरुणिमा सिन्हा को पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

घर का सपना

• फारिदेह खल्अतबरी

घर दुखी था। उसमें रह रहे लोग वहां से जाने वाले थे। जल्दी ही नए लोग वहां आकर रहने वाले थे। घर को अपने पड़ोसी घर से जलन होती थी। घर को जब से याद था, पड़ोसी घर में एक ही परिवार रहता आया था।

जब वे वहां रहने आए थे, तो माता–पिता युवा थे और बच्चे छोटे। अब बच्चे बड़े हो चुके थे और माता–पिता बूढ़े।

इस घर को भी ऐसे ही किसी परिवार की चाह थी जो हमेशा वहीं रहे। लेकिन क्या घर के मालिक को इस बात की परवाह थी कि घर क्या चाहता था ?

घर ने सोचा, खूब सोचा, बहुत सोचा, और फिर उसे एक तरकीब सूझी...

उसे पता था कि अपने सपनों को साकार करने के लिए उसे क्या करना होगा।

घर का मालिक कुछ लोगों को लेकर आया जो घर किराए पर लेना चाहते थे। उन्हें देख घर खूब चिड़चिड़ाया और उसने अपनी नाक–भौं चढ़ा लीं...और खिड़कियों की चौखटें टेढ़ी–मेढ़ी हो गईं।

''इस घर की खिड़कियां टेढ़ी हो गई हैं! मैं इन्हें बंद नहीं कर पा रहा हूं...नहीं भई, यह घर तो हमारे काम का नहीं है।''

किरायेदार चले गए और घर के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान खिल गई।

अगले दिन दूसरे लोग आए। उन्हें देख दुखी घर खूब रोया, बहुत रोया और रो–रोकर पूरी दीवारें भिंगा दीं।

''दीवारें कितनी गीली हैं!हमारे बच्चे तो इस सीलन भरे घर में बीमार हो जाएंगे। नहीं, यह घर हमारे काम का नहीं है।''

घर ने अपने आंसू पोंछे और उसकी मुस्कान पिछली बार से और बड़ी हो गई।

अगले दिन कुछ और लोग आए। घर ने दुख और निराशा में अपना सिर हिलाना शुरू किया और हिलाता रहा, हिलाता ही रहा...

''घर तो हिल रहा है! इसकी बुनियादें मजबूत नहीं हैं। सोते समय इसकी छत हमारे सिरों पर आ गिरेगी! नहीं, नहीं, यह घर हमारे काम का नहीं है।''

घर के मालिक ने और कोशिश की। वह कुछ और लोगों को घर दिखाने के लिए लेकर आया।

इस बार घर ने अपने दांतों को कसकर भींच लिया ताकि उसका दरवाजा खुले ही ना।

''यह दरवाजा जाम हो गया है और हम इसमें फंस सकते हैं...नहीं, नहीं, नहीं यह घर हमारे काम का नहीं है।''

वे लोग भी घर किराए पर लिए बिना चले गए।

''खिड़कियां बंद नहीं होतीं, दरवाजा खुलता नहीं, दीवारों में सीलन भर गई है, छत हिलती है...

मैं इसे ठीक नहीं कर सकता!''

नाराज मालिक ने दरवाजे पर एक जोरदार लात मारी।

''मैं इस घर को बेच दूंगा।''

यह सुनकर घर खिल उठा और उसने खुशी में ताली बजाई।

इस आवाज ने घर को मालिक को बहुत डरा दिया।

''घर गिर रहा है! मैं इसे जल्दी से जल्दी बेच

दूंगा, भले ही मुझे सस्ता बेचना पड़े।''

कुछ दिन ऐसे ही गुजर गए।

गर्मियों का मौसम खत्म होते–होते एक सुबह एक युवा परिवार घर देखने आया। वे अपने बच्चों के स्कूल के नजदीक कोई घर चाहते थे।

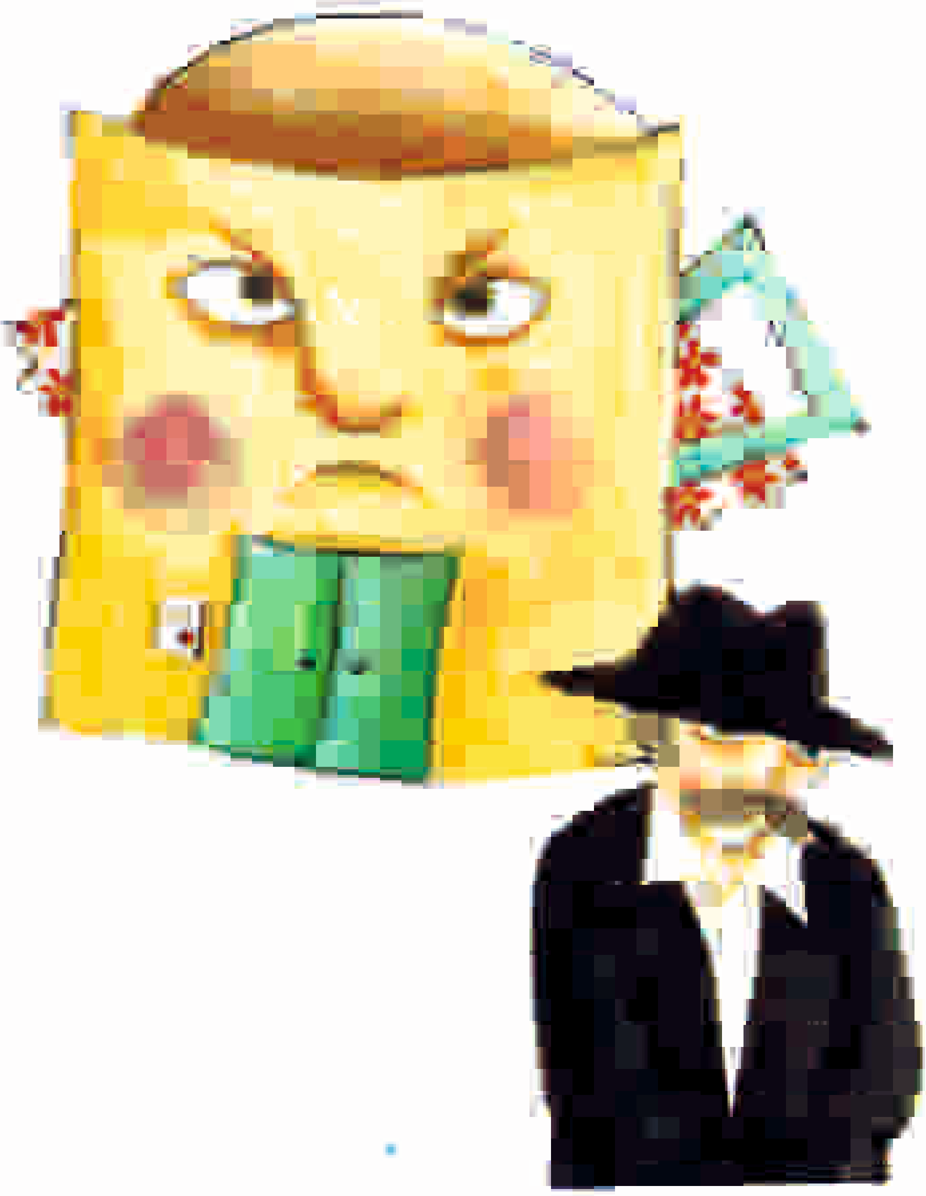

बहुत जल्दी ही घर का सौदा तय हो गया। घर के मालिक ने पैसे लेकर उस युवा परिवार को घर की चाबी सौंप दी और वहां से चला गया।

घर का सपना साकार हो चुका था। आखिरकार, उसे ऐसा परिवार मिल गया था जो बहुत लंबे अरसे तक वहां रहने वाला था।

अब वह खिल गया था और चमक रहा था!

''कितना सुंदर और उजला घर है! ऐसा लगता है मानो यह मुस्कुराकर हमारा स्वागत कर रहा हो।''

''और इतनी कम कीमत में भी मिल गया!''

''लेकिन उसने घर इतने सस्ते में क्यों बेच दिया?''

फारिदेह खल्अतबरी का जन्म 1948 में तेहरान में हुआ था। वह न सिर्फ शाबाविज किताबों की प्रकाशक हैं बल्कि एक सफल लेखिका भी। उन्होंने 8 साल की उम्र से ही कहानियां लिखना शुरू कर दिया था। 1984 में शाबाविज प्रकाशन समूह की स्थापना के साथ ही उन्होंने लेखन को पेशा बनाने का अपना सपना साकार कर लिया। अब तक वह 50 से भी ज्यादा किताबें लिख चुकी हैं।

चित्र : अली मफाखेरी

सूर्य से पहले भी था प्रकाश

सुशील कुमार शर्मा

प्रकाश का उद्‌भव कैसे हुआ इस पर विभिन्न मत हो सकते है लेकिन सूर्य से पहले भी प्रकाश था ये सार्वभौमिक सत्य है। क्योंकि अंतरिक्ष में सूर्य से कई अरब साल पहले कई आकाश गंगाओं, तारों एवं ग्रहों का जन्म हो चुका था। हमारे सौरमंडल के निर्माण से पहले गैसें एवं द्रव्य अंतरिक्ष में विद्यमान थे। इनके संयोजन एवं अभिक्रियाओं से सर्वप्रथम सूर्य (Sun) का निर्माण हुआ, उसके बाद शनैः शनैः सभी ग्रहों एवं उपग्रहों (Satellite (natural) का निर्माण हुआ। ग्रहों के निर्माण, उनके वातावरण एवं सौरमंडल में जीवन के उद्‌भव में सूर्य के प्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 45 अरब साल पहले न सूर्य था, न पृथ्वी, न ही हमारा सौरमंडल (Solar system), चारों ओर सिर्फ अंतरिक्ष ही अंतरिक्ष था। 45 अरब साल पहले एक नेबुला (Nebula) जो कि एक बादल था एक गुबार के रूप में उठा, दबाब के कारण ये अत्यंत सघन हो कर केंद्रीय मोल्टन मास (Central molten mass) में बदल गया। इसमें दबाब एवं ताप अंदर की ओर बढ़ता गया एवं इसके कोर एवं केन्द्रक का तापमान लाखों डिग्री सेंटीग्रेड हो गया।

थर्मोन्यूक्लियर हाइड्रोजन (Thermonuclear hydrogen) की फ्यूज़न (Fusion) अभिक्रिया से सूर्य चमकने लगा और इस तरह से प्रकाश के देवता का आविर्भाव हुआ। (इस सिद्धांत को नेबुलर सिद्धांत (Nebular theory) कहते हैं एवं इसका प्रतिपादन जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट ने 1755 में किया था।)

सूर्य के बारे में विशिष्ट तथ्य

1. हमारा सूर्य एक स्वनिर्मित भट्ठी है जो द्रव्यमान को ऊर्जा में परिवर्तित करता है। प्रति सेकेंड यह 657 मिलियन टन हाइड्रोजन को 653 मिलियन टन हीलियम में बदलता है बाकी के 4 मिलियन टन द्रव्यमान को सूर्य अंतरिक्ष में ऊर्जा के रूप में विसरित कर देता है।

2. सूर्य 15 मिनट में इतनी ऊर्जा का उत्सर्जन कर देता है जितना मनुष्य अपने जीवन काल में सभी स्त्रोतों से प्राप्त ऊर्जा का करता है।

3. सूर्य से पृथ्वी की दूरी 93000000 मील है।

4. सूर्य का व्यास 865000 मील है।

5. सूर्य से पृथ्वी पर आने वाली ऊर्जा 6500 केल्विन।

6. सूर्य से पृथ्वी पर आने वाली रोशनी 100000 लक्स।

पृथ्वी पर जीवन

जीवन के लिए तीन चीजों का होना जरूरी है 1. कार्बन, 2. पानी 3. प्रकाश। पृथ्वी पर ये तीनों जीवन उद्भव तत्व विद्यमान हैं इसलिए पृथ्वी पर जीवन का आविर्भाव हुआ। पृथ्वी पर करीब 3 अरब साल पहले जीवन का उद्भव हुआ था। इसके प्रमाण रोडेशिया देश (Rhodesia Country) में जीवाश्म के रूप में मिले हैं। यहाँ पर 3 अरब साल पुरानी शैवाल के जीवाश्म मिले हैं।

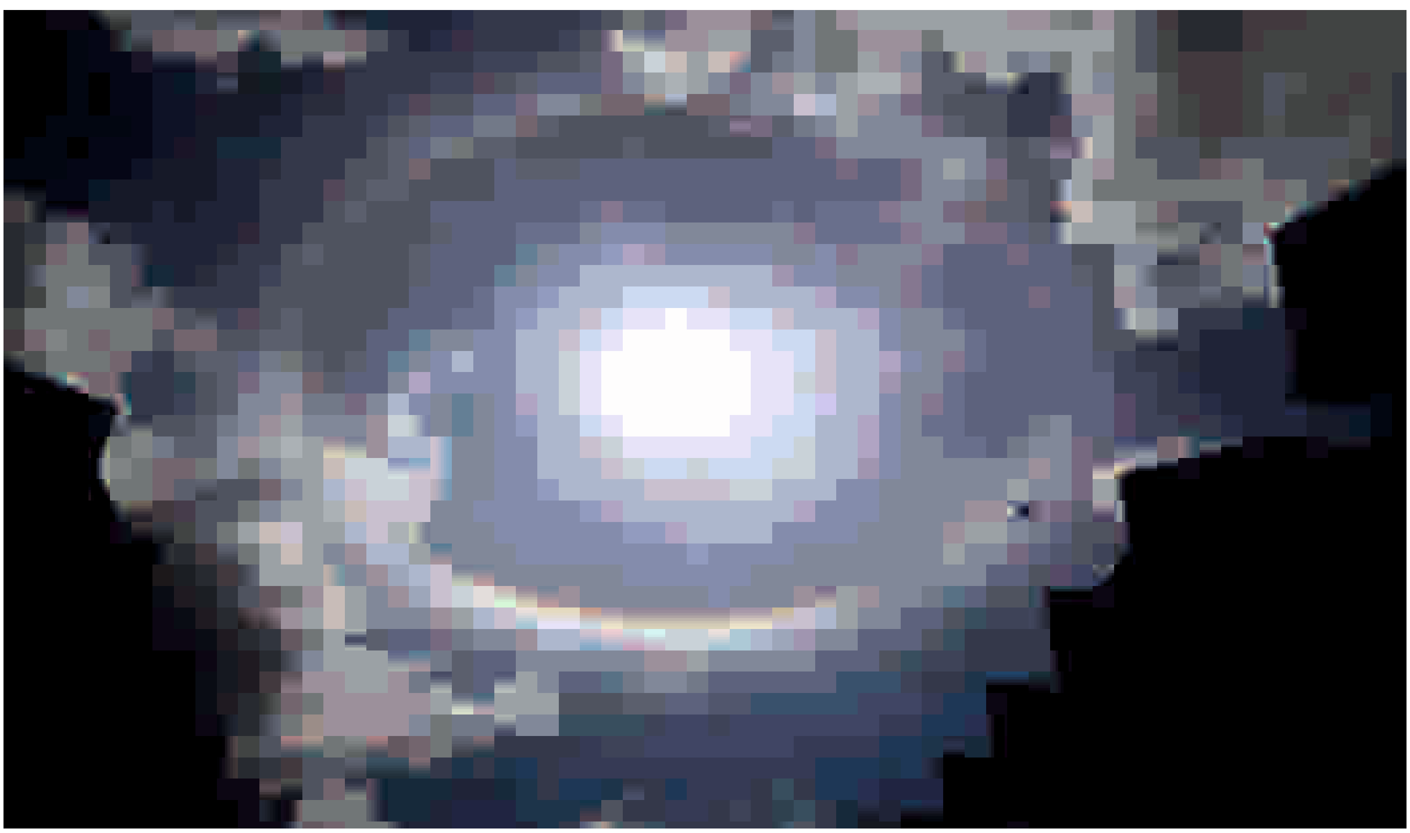

पृथ्वी पर करीब दो अरब साल पहले प्रथम जैविक अणु का आविर्भाव हुआ था जिसने सबसे पहले सूर्य प्रकाश, कार्बन डाई ऑक्साइड एवं पानी की सहायता से अपने भोजन का निर्माण किया होगा। इस तरह से दो अरब साल पहले प्रकाश संश्लेषण की क्रिया पृथ्वी पर उत्पन्न हुई। किस तरह से ये जैविक अणु कालांतर में विकसित होकर मनुष्य बना होगा? ये अकल्पनीय किन्तु सत्य है। इस विकास के क्रम को समझने के मत अलग–अलग हो सकते हैं किन्तु इस विकास के क्रम की महत्वपूर्ण कड़ी प्रकाश है इसमें संदेह नहीं है।

मानव विकास एवं सभ्यता में प्रकाश की भूमिका

लगभग 5 लाख साल पहले पृथ्वी पर मनुष्य का प्रादुर्भाव हुआ था। मनुष्य के प्राकट्य एवं उसके अस्तित्व के संरक्षण में प्रकाश ने अहम भूमिका निभाई है। मनुष्य ने अपनी शारीरिक कमजोरी को अपने मस्तिष्क एवं बुद्धि से दूर किया होगा। जंगलों में रहने के लिया गुफाओं का निर्माण, माँसाहारी शक्तिशाली पशुओं से अपनी सुरक्षा एवं सामाजिक विकास को गति देने में किस तरह प्रकाश का सहारा मनुष्य ने लिया होगा इसकी कहानी एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बहुत ही रोमांचकारी है।

4 लाख साल पहले मनुष्य को अग्नि, जो कि प्रकाश का मुख्य स्त्रोत है एवं जो दैनिक जीवन एवं उसके विकास क्रम को गति देने वाला घटक है, प्राप्त हुआ था। 4 लाख साल पहले अंतरिक्षीय प्रक्रिया से बिजली गिर कर अग्नि उत्पन्न हुई होगी या वृक्षों की डालियों के आपसी टकराव से या पत्थरों के घर्षण से अग्नि की उत्पति मनुष्य के सामने हुई होगी। इस तरह से अग्नि की प्राप्ति मनुष्य के सामाजिक विकास की रीढ़ बन गई। एक किवदंती प्रचलित है कि ग्रीक देवता प्रोमोथिस (Greek God Prometheus) ने ओलम्पस (Olympus) से अग्नि चुरा कर मनुष्य को भेंट की थी। जलती हुई मशाल एवं अलाव का प्रयोग प्रारंभिक मनुष्य ने कृत्रिम रोशनी के लिए किया होगा। 4 लाख साल पहले पेकिंग मनुष्य ने अग्नि का प्रयोग गुफाओं में शुरू कर दिया था। गुफाओं में अँधेरे से निजात एवं जंगली जानवरों से सुरक्षा शायद अग्नि का प्रथम प्रयोग रहा होगा। मशाल पहला वहनीय प्रकाश स्त्रोत माना जा सकता है।

सर्वप्रथम लकड़ियों को इकट्ठा करके मशाल का रूप दिया होगा और इस तरह से आग पर नियंत्रण कर मनुष्य सभ्यता के रास्ते पर आगे बढ़ा होगा। प्रकाश ने ही प्रारंभिक मानव को इकट्ठा कर समूह निर्माण को प्रेरित किया होगा जो कालांतर में कबीले एवं परिवार की सामाजिक रचना का माध्यम बना होगा। जिस समूह का प्रकाश पर जितना नियंत्रण होगा वह समूह उतना ताकतवर एवं श्रेष्ठ माना गया होगा इस तरह से मनुष्य के सामाजिक विकास एवं विस्तार का क्रम शुरू हुआ होगा। सिंधु घाटी की सभ्यता, मोहनजोदड़ो सभ्यता एवं हड़प्पा सभ्यता के अवशेष बताते हैं कि उस समय के मनुष्य रोशनी के लिए दिए जलाते थे एवं ये दिए चट्टानों, पत्थरों, हड्डियों एवं जानवरों के सींगों के बने होते थे। जानवरों एवं वनस्पतियों की चर्बी का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता था।

आविष्कार

टेलीफोन: बेल से सेल तक

जब आपको किसी से टेलीफोन से बात करनी होती हे तो आप क्या करते हैं? हाथ बढ़ाकर अपना मोबाइल फोन उठा लेते हैं या दीवार पर रखे या चौकी पर टंगे लैंडलाइन फोन का चोगा उठाकर नंबर मिलाते हैं? या फिर डाकखाने या परचून की दुकान वाले को पैसे देकर उसका फोन इस्तेमाल करते हैं? फोन चाहे जहां इस्तेमाल करें, तरीका वही रहता है। आप फोन मिलाते हैं, दूसरी ओर से फोन उठाने का इंतजार करते हैं। शुरुआत में फोन करना इतना आसान नहीं था।

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने 1880 ई. में टेलीफोन का आविष्कार किया था। 10 मार्च 1876 में उन्होंने अपने सहायक थॉमस वाटसन को कॉल किया। बेल ने मुंह की ओर रखने वाले हिस्से से जोर से बोल कर उन्हें अपने पास आने को कहा। वॉटसन ने कान की तरफ वाले हिस्से से उनकी आवाज सुनी और उनके कमरे में पहुंच गए। उस समय टेलीफोन तार के जरिये सीधे एक–दूसरे से जुड़े हुए थे।

बाद में जब ज्यादा लोग टेलीफोन का इस्तेमाल करने लगे तो 'एक्सचेंज' बनाए जाने लगे। इन एक्सचेंजों में एक स्विचबोर्ड लगा होता था जिसके जरिये अलग–अलग इलाके के लोगों को एक–दूसरे से जोड़ा जाता था। और टेलीफोन दिखने में कैसे होते थे! उनमें बोलने वाला हिस्सा यानी माउथपीस और सुनने वाला हिस्सा यानी ईयरपीस, दोनों अलग–अलग होते थे। और अब तक उनमें डायल भी नहीं होते थे। इसके लिए पहले फोन करने वाले को रिसीवर उठाना पड़ता था और उसके बाद उसे ऑपरेटर को बताना पड़ता था। फिर ऑपरेटर तारों को इधर से उधर करके जोड़ देते थे और दूसरी तरफ वाले इंसान को फोन लग जाता था। लेकिन जानते हो, बात करने वालों को ध्यान रखना पड़ता था कि वे क्या बात कर रहे हैं क्योंकि अगर ऑपरेटर चाहे तो वो दोनों तरफ के लोगों की बात को सुन सकता था।

जैसे–जैसे टेलीफोन की संख्या बढ़ी, ऑपरेटर के लिए सबके नंबरों को याद रखना मुश्किल हो गया। तब ऐसे फोन बनाए गए, जिनमें डायल होता था और कोई भी बिना ऑपरेटर की सहायता के, जिससे मन चाहे बात कर सकता था। लेकिन तब भी लंबी दूरी के कॉल के लिए ऑपरेटर की सहायता लेनी ही पड़ती थी। जल्दी ही लोग चलते–फिरते फोन पर बात करने के बारे में सोचने लगे। लेकिन नहीं, अभी तक सेलफोन नहीं आए थे। मगर आप रास्ते में

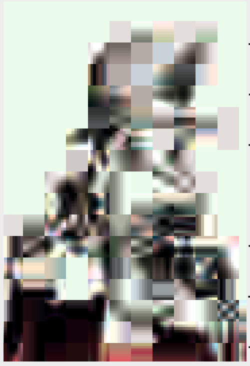

रुक कर किसी सार्वजनिक टेलीफोन बूथ से किसी को भी नंबर डायल कर सकते थे। 1930 के दशक तक दुनिया के कई शहरों में इस तरह के सार्वजनिक टेलीफोन बूथ बन गए थे। दरअसल, बहुत सारे लोगों को ऐसे ही बात करना पड़ता था क्योंकि टेलीफोन सिर्फ अमीरों के पास ही होते थे। कुछ साल के बाद लोग कार चलाते–चलाते बात करने के बारे में सोचने लगे और बहुत सारे कारों के अंदर ही टेलीफोन लगने लगे। रिसीवर और डायल वाले। लेकिन ये कार फोन बेतार होते थे।

1970 के दशक तक कुछ लोगों के पास ऐसे फोन होने लगे जिन्हें वो अपने बैग में लेकर चल सकते थे। इन्हें 'सेटेलाइट फोन' कहा जाता था। इनसे उपग्रहों के जरिये दुनिया में कहीं भी बात की जा सकती थी। लेकिन ये ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो सके, क्योंकि इनसे बात करने के लिए इन्हें आसमान की ओर करके उपग्रहों की सीध में रखना जरूरी होता था। यानी कि बात करने के लिए छत पर जाना पड़ता था! लेकिन इसी बीच सेलफोन आ गया। इन्हें इस्तेमाल करने के लिए उपग्रह की सीध में रखने या छत पर जाने की जरूरत नहीं होती थी। ये फोन तरंगों के जरिये पास के से सेल टावर से जुड़ते थे। इनसे घर में या ऑफिस में कहीं भी बैठे–बैठे बात की जा सकती थी। पहला सेलफोन 1973 में बना जिसका वजन एक किलो था। बाद में यह इतना छोटा हो गया कि आपकी जेब में समा जाए!

एक सेलफोन अन्य तरीकों से सुविधाजनक भी है। लैंडलाइन फोन को तारों से जुड़ा होना चाहिए। इसका मतलब है कि कस्बों के बीच केबल बिछाने के लिए खुदाई करनी पड़ती है। इसके लिए भी पैसों की जरूरत पड़ती है। कई गांवों में फोन नहीं था। लेकिन वायरलेस सेल फोन ने सब बदल दिया है। लगभग सभी के पास अब एक सेलफोन नहीं है। आज के सेलफोन सिर्फ फोन करने के लिए नहीं है। आप चैट कर सकते हैं, खेल खेल सकते हैं, ई–मेल भेज सकते हैं, इंटरनेट ब्राउज कर सकते हैं, संगीत सुन सकते हैं, फोटो और वीडियो देख सकते हैं, एप्लीकेशन डाउनलोड कर सकते हैं...। आज जिसे हम फोन कहते हैं, वास्तव में वो एक कंप्यूटर है जो कॉल कर सकता है। अभी आप बस एक दोस्त का नाम लेते हैं और वह तुरंत खुद ब खुद उसका नंबर मिला देगा। हो सकता है एक दिन ऐसा भी हो जाए जब आप अपने फोन से कहें, ''मेरी तीसरी कक्षा में मुझे गणित पढ़ाने वाली टीचर का नंबर ढूंढो'', और वह ऐसा कर डाले।

स्वप्न वृक्ष

एक राजा था। उसकी दो रानियां थीं। बड़ी रानी का एक और छोटी रानी के तीन पुत्र थे। राजा अपने चारों पुत्रों को बहुत मानता था, लेकिन बड़ी रानी का पुत्र अपने तीनों भाइयों की अपेक्षा अधिक सीधा, ईमानदार और सच्चे स्वभाव का था। इसलिए उसके प्रति राजा का स्नेह कुछ विशेष था। तीनों भाई इसी कारण उससे ईर्ष्या करते थे।

एक रात राजा ने एक अद्भुत स्वप्न देखा। स्वप्न में उसने एक पेड़ को विचित्र ढंग से उगते–बढ़ते और बड़े पेड़ का आकार लेते देखा। पेड़ की जड़ और उसका तना चांदी का था, सारी शाखाएं सोने की थीं, सारे पत्ते हीरों से जड़े थे और फलों की जगह मोतियों के गुच्छे लटक रहे थे। पेड़ पर एक सुंदर तोता बैठा था। तोता जब प्रसन्न होता तो पेड़ खिला–खिला रहता था, तोते के उदास होते ही पेड़ भी मुरझा जाता।

राजा को उस पेड़ ने कुछ इस तरह से आकृष्ट कर लिया कि अगले दिन प्रातः काल उसने अपने चारों पुत्रों को बुलवाया और उस अद्भुत लुभावने वृक्ष के विषय में बताते हुए कहा, "तुममें से

जो राजकुमार वैसा वृक्ष ला सकेगा, उसे मैं अपना उत्तराधिकारी बनाऊंगा।" इस काम के लिए उसने राजकुमारों को दो वर्ष का समय दिया। छोटी रानी के तीनों राजकुमारों ने राजा से बहुत सारा धन लिया और वृक्ष की खोज में निकल पड़े। चलते–चलते उन्हें एक ऐसा नगर मिला, जहां सोने–चांदी का काम करने वाले बहुत सारे कारीगर रहते थे। वे तीनों वहीं ठहर गए और कारीगरों से सोने–चांदी का पेड़ बनवाने में लग गए।

पिता से कुछ पैसे लेकर बड़ा राजकुमार भी भाइयों के पीछे–पीछे आ रहा था। तीनों राजकुमारों ने मौक़ा देखकर उसे कुएं में ढकेल दिया। संयोगवश एक चरवाहा पानी पीने के लिए वहां रुका। उसने कुएं में रस्सी डालकर राजकुमार को निकाला। राजकुमार ने उसका धन्यवाद किया और अपने भाइयों की करतूत बताई। उसने अपने पिता के विचित्र स्वप्न के विषय में भी बताया। चरवाहे को राजकुमार से सहानुभूति हो रही थी। उसने बताया, "यहां से कुछ दूर आगे एक जंगल है। वहां एक साधु छह महीने से समाधि में लीन हैं, उनकी समा. धि अब टूटने वाली है। तुम उनके पास जाओ, शायद वे उस पेड़ के विषय में कुछ बता सकें।"

बहुत दिनों से समाधि में लीन रहने के कारण साधु के चारों ओर घास–फूस का जंगल बन गया था। राजकुमार ने चारों ओर साफ़–सफ़ाई की और प्रतीक्षा करने लगा। साधु की समाधि टूटी, वे राजकुमार की सेवा से बहुत प्रसन्न हुए और उसे वरदान मांगने के लिए कहा। राजकुमार ने सोने–चांदी वाले वृक्ष की मांग कर दी। साधु लज्जित होते हुए बोले, "यह तो मेरे वश में नहीं है। आगे दूसरे जंगल में मेरे गुरु हैं, वे शायद तुम्हारी सहायता करें।" राजकुमार लंबी यात्रा के बाद दूसरे साधु के पास पहुंचा। वे एक साल तक सोते थे। राजकुमार उनकी सेवा करता रहा। जागने पर साधु ने प्रसन्न होकर वरदान मांगने के लिए कहा। राजकुमार ने उनसे भी वही वृक्ष मांगा, लेकिन इन साधु महाराज ने भी खेदपूर्वक अपनी असमर्थता जताई। राजकुमार उदास हो गया। साधु ने उसे ढांढस देते हुए कहा, "आगे के जंगल में मेरे गुरु हैं, उनमें दैवी शक्ति है, वे अवश्य तुम्हारी मदद करेंगे।"

राजकुमार आगे बढ़ा। घनघोर जंगल में भटकते–भटकते अंततः उसे तीसरे साधु महाराज भी मिल गए। वे भी राजकुमार की मनोकामना पूरी नहीं कर पाए, लेकिन सामने के मंदिर की तरफ़ इशारा करते हुए उन्होंने कहा, "उस मंदिर के देवता की पूजा करो, देवता प्रसन्न होकर तुम्हें एक मणि देंगे। वह मणि तुम्हें पाताल लोक ले जाएगी। वहां ढेर सारी परियां रहती हैं। वे ही तुम्हारी मनोकामना पूरी कर सकती हैं।" राजकुमार ने वैसा ही किया और उसे मणि मिल गई। मणि के सहारे वह पाताल लोक पहुंच गया। देवता की मणि देखते ही प्रहरियों ने द्वार खोल दिए। उस दिव्यलोक में कई परियां थीं जिनके अलग–अलग महल थे। पहला महल 'चांदी परी'का था। वहां सब कुछ चांदी का बना था। चांदी परी ने कहा, "मैं जब चाहूं, चांदी की जड़ और चांदी के तने वाला पेड़ बना सकती हूं।" आगे बढ़ने पर 'सोना परी'

का महल था। जब चांदी परी पेड़ की जड़ और तना बना देती तब सोना परी उसे सोने की डालियों से सजा देती थी। सोना परी से आज्ञा लेकर वह आगे बढ़ा तो उसे 'हीरा परी' और फिर 'मोती परी' के महल मिले। वह बारी–बारी दोनों परियों से मिला। जब चांदी परी और सोना परी पेड़ की जड़, तना और डालियां बना लेतीं, तब हीरा परी हीरे के पत्तों से डालियों को सजा देती थी और फिर मोती परी मोतियों के फलों से डालियां भर देती थी। अंत में राजकुमार 'तोता परी' के महल में पहुंचा। तोता परी की विशेषता यह थी कि जब चांदी, सोने, हीरे और मोती से बना पेड़ तैयार हो जाता तब वह एक सुंदर तोता बना कर पेड़ पर बैठा देती थी। जब तोता प्रसन्न रहता तब पेड़ सुंदर खिला–खिला रहता था, तोते के उदास होते ही पेड़ भी मुरझाने लगता था। राजकुमार को अपनी मनोकामना पूरी होती लगी। वह सभी परियों को साथ लेकर मणि के सहारे पृथ्वी लोक पर वापस आ गया।

राजकुमार ने मंदिर में देवता की मणि उन्हें लौटा दी और साधु महाराज को धन्यवाद देने गया। उसकी सफलता से साधु महाराज बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने राजकुमार को एक लाठी और एक रस्सी दी जिससे ज़रूरत पड़ने पर वह रास्ते में परियों सहित अपनी भी रक्षा कर सके। साधु ने बताया कि लाठी और रस्सी की शक्ति से वह जब चाहे किसी को भी अपने पास बुला सकता था। वहां से आगे, वह दूसरे साधु को भी धन्यवाद देने के लिए रुका। साधु उसकी पितृभक्ति से बहुत प्रभावित हुए और प्रसन्न होकर उसे एक विशेष कटोरा दिया जिससे

वह अपनी इच्छानुसार हज़ारों लोगों को स्वादिष्ट भोजन करा सकता था।

अब पहले वाले साधु के पास जाना बाक़ी था। उनके पास पहुंचकर जब राजकुमार ने सारी बातें बताईं तो साधु को विश्वास नहीं हुआ। उनके मन में लालच उत्पन्न हो गया। उन्होंने राजकुमार को आज्ञा दी, "सभी परियों को यहीं छोड़कर तुम यहां से चले जाओ।" राजकुमार को विवश होकर उनकी आज्ञा माननी पड़ी। कुछ दूर जाते ही अचानक उसे रस्सी और लाठी की याद आ गई। उसने दोनों से कहा, "सभी परियों को साधु से छीनकर ले आओ।" कुछ ही पल में सभी परियां राज. कुमार के सामने थीं।

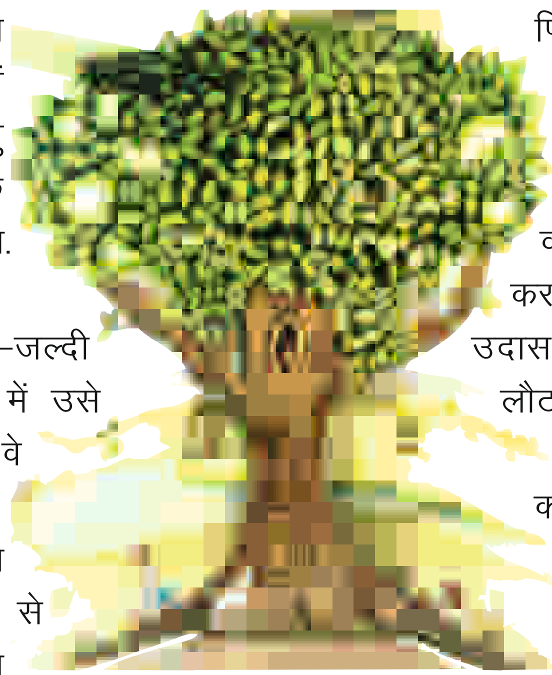

अब राजकुमार जल्दी–जल्दी आगे बढ़ा। संयोगवश रास्ते में उसे उसके तीनों भाई मिल गए। वे सोने– चांदी का पेड़ बनवाकर राजमहल को वापस लौट रहे थे। उन्होंने चालाकी से राजकुमार से सारी बातें जान लीं। उनकी नीयत फिर ख़राब हो गई। चलते–चलते उन्हें रास्ते में वही कुआं मिला। उन्होंने धोखे से राजकुमार को उसमें धकेल दिया और परियों के साथ राजमहल में वापस आ गए।

अगले दिन तीनों भाई परियों को लेकर दरबार में आए। उन्होंने राजा के सामने परियों से रुपहला–सुनहरा वृक्ष बनाने के लिए कहा, परंतु बहुत मिन्नतें करने के बाद भी परियों ने वृक्ष नहीं बनाया। वे पहले ही तीनों राजकुमारों के अपने बड़े भाई के प्रति दुर्व्यवहार से क्रुद्ध और दुखी थीं। लेकिन राजकुमार भला कहां हार मानने वाले थे? सोने–चांदी का जो वृक्ष वे कारीगरों से बनवाकर लाए थे, उसे उन्होंने दरबार में मंगवाया। राजा ने उसे देखा, लेकिन संतुष्ट नहीं हुआ। उसने कहा, "मैंने तो पेड़ को बनते हुए देखा था, बना–बनाया नहीं, और फिर इस पर तो तोता भी नहीं है। उचित यही होगा कि हम बड़े राजकुमार के भी आने की प्रतीक्षा कर लें।"

उधर कुएं में गिरे राजकुमार को एक बार फिर उसी चरवाहे ने बचा लिया। राजकुमार ने आभार व्यक्त करते हुए कटोरे की मदद से चरवाहे के परिवार सहित सारे गांव वालों को स्वादिष्ट भोजन कराया। फिर वह बहुत दुखी और उदास मन से राजमहल की ओर लौटा। उसके साथ न परियां थीं, न पिता के स्वप्न वृक्ष को बनाने की क्षमता। राजमहल में प्रवेश करते ही उसे दरबार में हुई सारी घटना का पता चला। वह उसी समय पिता के पास गया और उन्हें अपने भाइयों की सारी करतूत बताई। अगले दिन वह परियों के साथ दरबार में आया। परियों ने राजा के सामने रुपहला–सुनहरा, हीरे–मोतियों जड़ा पेड़ बनाया। अंत में पेड़ पर सुंदर तोता भी आया। राजा गदगद् हो उठे। उन्होंने राजकुमार को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

(उषा सिंह द्वारा लिखित यह कहानी www.hindikahani.hindi-kavita.com में पूर्व प्रकाशित है।)

जितनी आतीं
सब गिन डालीं
गिनते गिनते हारे,
इतने से
इस आसमान में
कितने सारे तारे ?

मूंछों में मुस्काओ मत
मारो जोर ठहाका
मटर के दाने
कितने छीले
बतलाओ
मटरू काका ?

घोड़े चले
बहत्तर आगे
पीछे हाथी साठ,
उनके पीछे ऊंट
आठ सौ
ऐसे उनके ठाठ

वीरेन्द्र दुबे की कविताएं

शेख चिल्ली चला दिल्ली

लंच में भी पढ़ाई की जा रही है। लगता है। इस बार टॉप करना है।
हाँ.. मुझे अच्छे कॉलेज में जाना है।
लेकिन झुनझुन नगर में तो कॉलेज है ही नहीं। इसलिए दूर हॉस्टल में रहना होगा।
फिर तुम्हें अपनी मम्मी और दोस्तों की याद आयेगी।

नूरी मुझे कॉलेज बनवाना है।
इतना बड़ा काम तो दिल्ली जा कर ही हो सकता है।
तो मैं दिल्ली जाऊँगा।
क्या ?

सर झुनझुन नगर का एक लड़का दिल्ली जा रहा है।
कुछ करना होगा। रोको उसे, नहीं तो वो हीरो बन जाएगा...
उम्मीद है जिस काम के लिए शेख चिल्ली दिल्ली जा रहा है उसमें वो सफल होंगे।
रिपोर्टर कवर करते हुए।
मैं तो चाहता था कि शेख चिल्ली पढ़ाई न करे। पर ये तो हीरो बन गया।
समझ गए न तुम लोगों को क्या करना है।
पता है, सर उसे भूत बनकर डराना है।

शेख चिल्ली कहीं रात को भूत आ गया तो!!!
रात काफी हो चुकी है। नूरी बैठ जाओ।
भूत से तो मुझे भी डर लगता है। आका।
...और मुझे भी!
मेरे पास एक आइडिया है। नूरी जल्दी भूत के कपड़े लेकर आओ। हम उन्हें पहन लेंगे। क्योंकि भूत–भूत भाई–भाई।
जो हुक्म मेरे आका।

टुनटुन नगर के मंत्री के आदमी शेख चिल्ली को डराने आ रहे थे। नूरी उनके ही भूत वाले कपड़े जादू से अपने पास ले आता है।

शेख चिल्ली जब दिल्ली के कॉलेज में पहुंचता है।
दोस्तों, अभी मैं न्यूज देखकर आ रहा हूं। सरकार ने झुनझुन नगर में कॉलेज बनवाने को मंजूरी दे दी है।
अब तो पढ़नी ही पड़ेंगी। मोटी–मोटी किताबें। ?
क्या?
मैंने कुछ गलत कहा क्या?
समाप्त

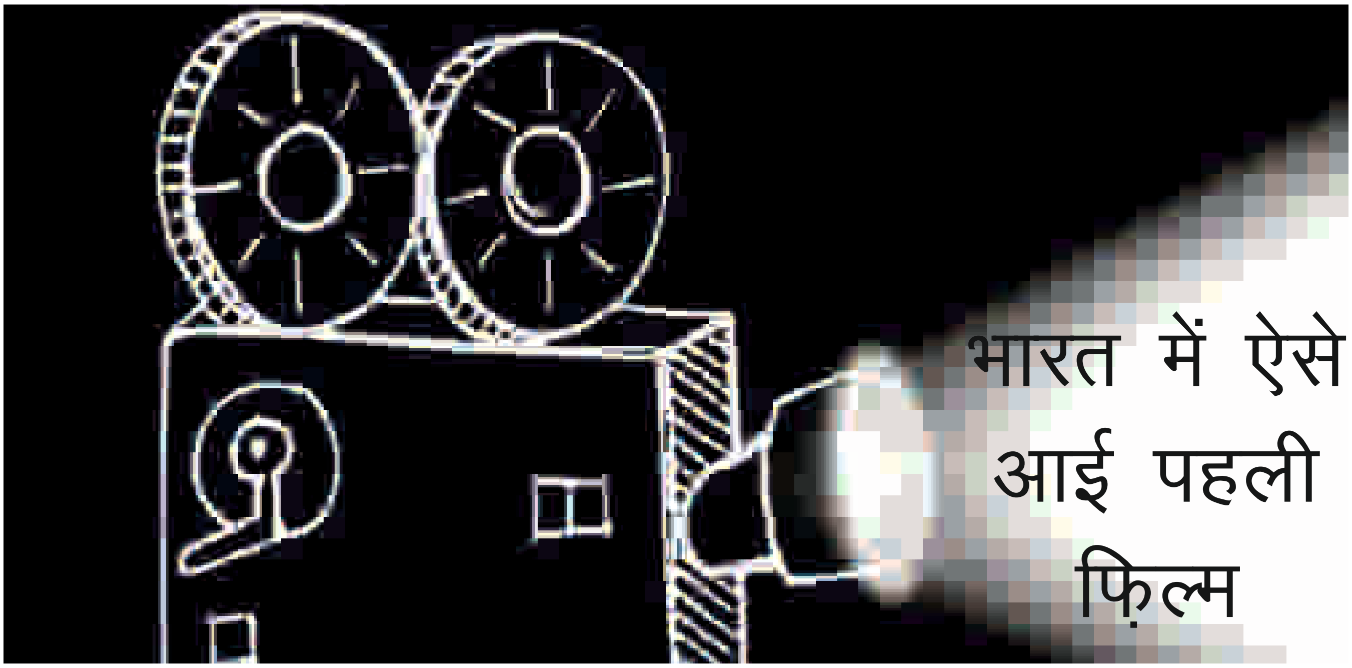

भारत में ऐसे आई पहली फ़िल्म

7 जुलाई, 1896 को बॉम्बे के टाइम्स ऑफ इंडिया में एक विज्ञापन छपा, जिसमें शहरवासियों को वॉटसन होटल में ''सदी की महानतम उपलब्धि और दुनिया के सबसे बड़े चमत्कार'' को देखने के लिए आमंत्रित किया गया था। विज्ञापन के अनुसार, शाम को चार अलग–अलग समय पर इस चमत्कार को देखने वाली जनता को हॉल में आने की अनुमति थी और हर एक शो का टिकट एक रुपया रखा गया था, जो उस समय के हिसाब से एक बड़ी रक़म थी। यह चमत्कार और कुछ नहीं बल्कि उपमहाद्वीप में 'चलचित्र' की पहली प्रदर्शनी थी, जिसे आज हम 'फ़िल्म' के नाम से जानते हैं। उस रात प्रदर्शित होने वाली सबसे भयानक फ़िल्म का नाम ''अराइवल ऑफ ए ट्रेन'' यानी ट्रेन का आगमन था।

इन फ़िल्मों को बनाने वाले और भारत तक लाने वाले दो फ्रांसीसी भाई लुई और अगस्त लुमियर थे, जिनकी कंपनी सिनेमैटोग्राफी का नाम आज तक फिल्म निर्माण के क्षेत्र में इस्तेमाल होता है। मिहिर बोस ने अपनी पुस्तक 'बॉलीवुड' में लिखा है कि दोनों भाइयों ने पहले 28 दिसंबर, 1895 को पेरिस के ग्रैंड कैफे में ऐसी फिल्में दिखाई थीं और पेरिस में सफलता के बाद, उन्होंने लंदन में रीजेंट स्ट्रीट पर भी अपने इस आविष्कार का सार्वजनिक प्रदर्शन किया था। यहां ''द अराइवल ऑफ ए ट्रेन एट ला सिओटैट स्टेशन'' फिल्म प्रदर्शित की गई थी, इस फिल्म में एक ट्रेन को स्टेशन में प्रवेश करते हुए दिखाया गया था। फिल्म में एक ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आकर रुकती है। हालांकि जब यह सीन पहली बार लंदन में बड़े पर्दे पर दिखाया गया, तो फिल्म के दर्शकों को ऐसा लगा जैसे कि ट्रेन परदे से निकल कर उनकी तरफ आ रही है और कुछ ही पलों में वे उसके नीचे कुचले जाएंगे। इसलिए प्रदर्शन के दौरान कुछ लोग दहशत में अपनी सीट से उठकर दरवाज़े की तरफ दौड़ पड़े, जबकि कुछ महिलाएं

बेहोश हो गईं और प्रशासन को इनकी देखभाल के लिए नर्सों को बुलाना पड़ा। किताब के अनुसार, ''लुमियर बंधुओं ने अपनी सिनेमैटोग्राफी फिल्मों को दुनिया के अन्य देशों में भी दिखाने का फैसला किया। वह अपनी बनाई हुई फिल्मों को प्रदर्शित करने के लिए ऑस्ट्रेलिया के लिए रवाना हुए, लेकिन रास्ते में बॉम्बे आ गया और उन्होंने फैसला किया कि क्यों न कुछ समय रुक कर इस 'कॉस्मोपॉलिटन' शहर में अपनी फिल्मों को प्रदर्शित किया जाये।'' ये फिल्में बॉम्बे के लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हुईं और इनके प्रदर्शन का सिलसिला तीन दिनों के बजाय एक महीने तक जारी रहा। इस दौरान पर्दा करने वाली महिलाओं और परिवार के साथ फिल्म देखने वालों के लिए बॉक्स की भी व्यवस्था की गई थी। टाइम्स ऑफ इंडिया ने इन फिल्मों पर टिप्पणी करते हुए लिखा था कि ''लुमियर बंधुओं का यह आविष्कार आधु. निक युग का एक महान वैज्ञानिक आविष्कार है।'' मिहिर बोस लिखते हैं, कि उपमहाद्वीप में प्रदर्शित की गई इन फिल्मों के दर्शक अधिकांश ब्रिटिश या वो भारतीय होते थे जो अंग्रेजी जीवन शैली के शौकीन थे। कुछ स्थानीय लोगों पर इन फिल्मों का बड़ा प्रभाव पड़ा। ऐसे ही एक स्थानीय, महाराष्ट्र के रहने वाले हरीश चंद्र सखाराम भटवाडेकर थे, जिन्हें आमतौर पर सावे दादा के नाम से जाना जाता था। वह पेशे से एक फोटोग्राफर थे। जब उन्होंने लुमियर बंधुओं की फ़िल्में देखीं, तो उन्होंने तुरंत लंदन से एक मोशन पिक्चर कैमरा मंगवाया, जो संभवत उपमहाद्वीप में आयात होने वाला अपनी तरह का पहला कैमरा था। एक भारतीय छात्र आरपी परांजपे ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गणित में एक प्रमुख स्थान हासिल किया था। दिसम्बर 1901 में जब वे भारत वापस लौटे तो उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। सावे दादा ने इस घटना को फिल्माया और जब इसका प्रदर्शन किया गया तो भारतीयों ने इसकी बहुत सराहना की। यह उपमहाद्वीप की पहली न्यूज़रील थी।

श्रोतः www.bbc.com

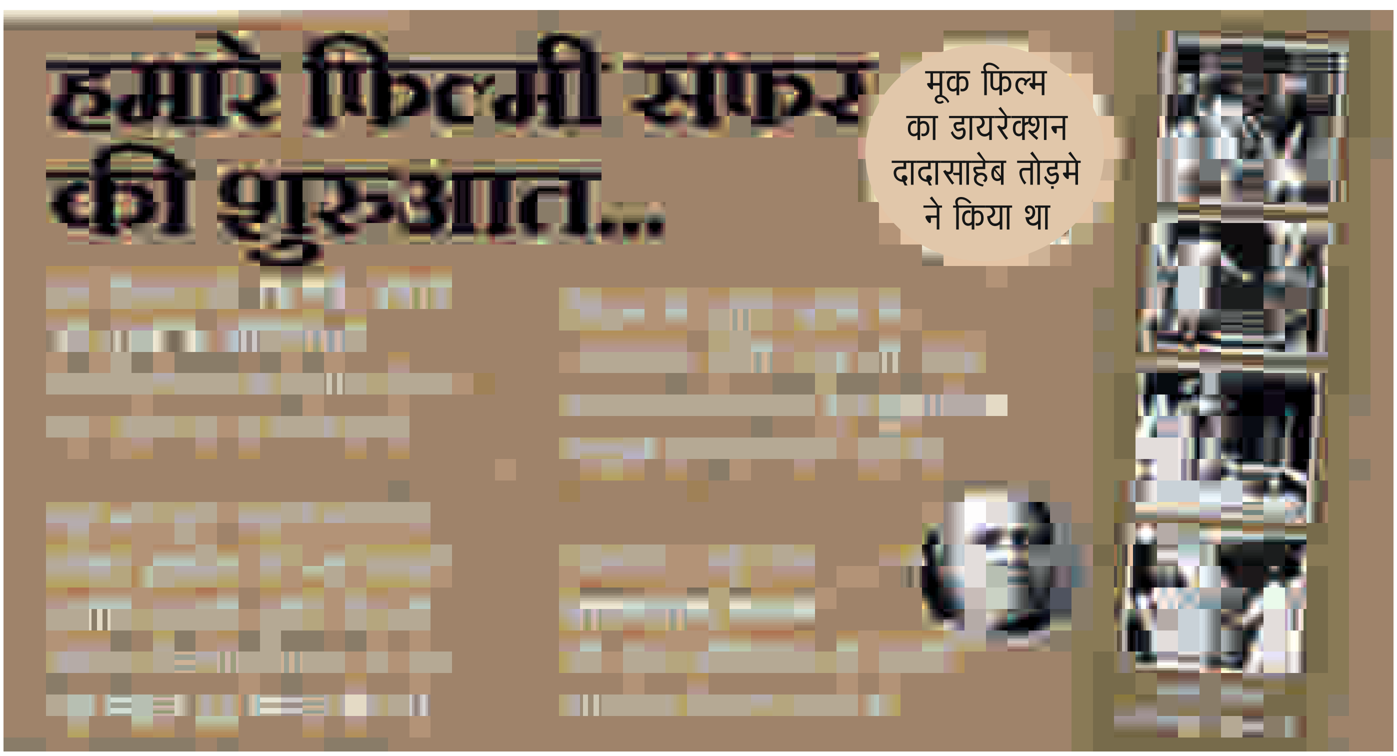

कूल कूल समर फूड

आम को फलों का राजा यूं ही नहीं कहा जाता है। मिर्जा गालिब, आमिर खुसरो और रवीन्द्र नाथ टैगोर सभी ने अपनी लेखनी में इस फल को खास सम्मान दिया है। गालिब ने तो ''दार–शिफत–ए–आम'' खास इस फल पर ही लिखी है।

जामुन की तो बात ही है निराली। कहते हैं भगवान राम ने चौदह वर्ष वन में इस रसीले फल को खाकर ही बिताए। ये भी माना जाता है वर्षा के देवता मेघा धरती पर जामुन के रूप में ही मौजूद हैं और इसलिए इसका रंग तूफानी आसमान की तरह है।

आम पन्ना का नाम संस्कृत के ‘पनिया’ से आया है जिसका अर्थ है ‘ऐसी चीज जिसे पीया जाए’। आम पन्ना को कॅरीचे पन्हे, आम झोर और आम पोरा भी कहते हैं। गर्मी के मौसम में इस शरबत को पीने से ताजगी और ठंडक मिलती है। यह लू लगने से भी बचाता है।

आईस गोला दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में अलग–अलग रूपों में मिलता है। कतरी हुई बर्फ को अलग–अलग स्वाद के पेय के साथ मिलाकर बनने वाला यह गोला बच्चों को बहुत भाता है। मेक्सिको में इसे रसपा कहते हैं तो उत्तरी अमेरिका में स्नो–बॉल।

ठंडई

ठंडई को भगवान शिव का प्रिय पेय माना जाता है और इसलिए इसे महाशिवरात्रि के समय बनाया जाता है। माना जाता है कि समुद्र मंथन के बाद जब शिव जी ने विषपान किया था तो उसके बाद उनकी जलन को कम करने के लिए उन्हें ठंडई पिलाया गया था।

सत्तू शरबत

सत्तू से बने इस पेय पदार्थ को मुख्य रूप से मुगलों के साथ गुरिल्ला युद्ध लड़ रहे छत्रपति शिवाजी के वीर मराठों को दिया जाता था। सत्तू को अन्य दालों और अनाजों के साथ मिलाकर बने इस पेय को एनर्जी का पावरहाउस कहा जाता है।

रहस्यमयी साइबर मित्र

श्री, कटपाड़ी नाम के छोटे से शहर के एक घर में रहती है। अम्मा एक जेवर की दुकान में काम करती है। अप्पा एक टैक्सी चालक हैं। अम्मा–अप्पा चाहते हैं कि श्री कम्प्यूटर के बारे में सीखे। उनको इस बात की खुशी है कि श्री को कम्प्यूटर इस्तेमाल करना अच्छा लगता है।

श्री कम्प्यूटर के लिए हमेशा समय निकाल ही लेती है। उसे कम्प्यूटर से मेल भेजने के अलावा कई और चीजों की भी जानकारी है। वह इस पर स्कूल के प्रोजेक्ट भी बनाती है। उसमें कई तरह के खेल भी हैं और इंटरनेट भी। श्री के साथ उसकी बुआ भी रहती हैं। प्यार से सब उन्हें अक्का कहते हैं। वे ज्यादातर टीवी पर अपनी पसंदीदा पुरानी फिल्में देखते हुए सो जाती हैं। वे श्री को गरमागरम डोसे में चटपटे नूडल्स भरकर देती हैं। टिफिन खत्म कर श्री को खेलना पसंद है। वे पुराने खेल नहीं जो अक्का को पसंद हैं, जैसे वो कौड़ी और पत्थर वाला खेल, बल्कि उसे कम्प्यूटर पर गेम खेलना ज्यादा पसंद है।

कम्प्यूटर उसका दोस्त है। उसमें सोशल नेटवर्किंग साइट जो है। श्री दो महीने पहले अपनी तेरहवीं सालगिरह पर ऐसी एक साइट से जुड़ी थी। चाय–नाश्ता करने के बाद वो रोज अपने स्कूल के दोस्तों के साथ इस साइट पर चैट करती है। वे एक–दूसरे को बताते हैं कि स्कूल बस में मिलने के बाद से अभी तक उन्होंने क्या–क्या किया। श्री बताती है कि उसने अपनी चाय में अतिरिक्त चीनी डलवाई है। एक दोस्त कहती है, ''वो तो तुम रोज करती हो।'' श्री फिर कहती है, ''मैंने मटन वाले स्वाद से नूडल्स भी डोसे के साथ खाए।'' दूसरी दोस्त छेड़ती है, ''तुम खाने के अलावा कुछ और भी करती हो?'' श्री नाराज हो जाती है। वो उनसे कम्प्यूटर पर दोस्ती खत्म करने का निर्णय करती है। फिर वो उन्हें याद भी करती है।

इससे पहले कि वो उनसे माफी मांगे, उसे एक और दोस्ती का निवेदन या फ्रेंड रिक्वेस्ट मिलता है। ये किसी चैत्रा नाम की लड़की का है। वो किसी अभिनेत्री की तरह सुंदर है। श्री दोस्ती के निवेदन को स्वीकार कर लेती है। एक क्लिक से अब वो मित्र बन जाते हैं। चैत्रा लिखती है, ''क्या तुम्हारे खूब सारे दोस्त हैं?'' ''नहीं! और कुछ को तो मैंने आज ही खो दिया।'' वो एक उदास चेहरे का इमोटिकॉन भेजती है। ''तो क्या हुआ? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके कितने दोस्त हैं– आपकी दोस्ती किस तरह की है, ये मायने रखता है और अब तो मैं तुम्हारी दोस्त हूं!''

श्री को यह सुनकर अच्छा लगता है।

''तुम्हारा स्कूल कहां है?'' श्री लिखती है।?

''तुम्हारे स्कूल के पास'', चैत्रा लिखती है।

''तुम्हें कैसे पता मैं किस स्कूल में जाती हूं?'' श्री सोच में पड़ जाती है। ''क्योंकि वह मेरे स्कूल के पास ही है।''

''ये तो अच्छा है। तब तो हम मिल भी सकते हैं।'' श्री लिखती है। ''ये हुई न बात! अब हम हमेशा सबसे पक्की सहेलियां बनकर रहेंगी। बाय!'' यह लिखकर चैत्रा साइन ऑफ करती है।

अगली सुबह, श्री अपने स्कूल के आस–पास दूसरा स्कूल ढूंढती है। मगर उसे कोई स्कूल नहीं दिखता। कितनी अजीब बात है कि उसने अगल–बगल किसी और स्कूल के बारे में सुना भी नहीं था। मगर चैत्रा उसके बाकी दोस्तों से कहीं अच्छी है। वो सिर्फ और सिर्फ श्री की खास दोस्त है, और किसी की भी नहीं।

आज वो गर्म नूडल्स को छूती तक नहीं है, हालांकि वे उसके पसंदीदा स्वाद चिली चिकन वाले हैं। अक्का को उसकी फिक्र होती है, ''तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ना?''

''स्कूल का काम बहुत है'', वो झूठ बोल देती है। ''तो जाओ कर लो, मैं भी तब तक सुस्ता लेती हूं'', उसकी बुआ कहती है। मगर श्री आराम नहीं करती है और ना ही वो होमवर्क करती है। उसकी जगह वह कम्प्यूटर खोलकर ऑनलाइन आ जाती है, और अपनी नई सहेली के आने का इंतजार करने लगती है। जल्दी ही उसे चैत्रा का एक संदेश मिलता है।

''हेल्लो दोस्त, कैसी हो?''

''मैं ठीक हूं, मैंने टिफिन नहीं खाया,'' श्री ने लिखा। ''क्यों?'' चैत्रा ने पूछा। ''क्योंकि मैं तुमसे बात करना चाहती थी। इसलिए मैंने बस जल्दी से चाय खत्म कर ली।'' श्री ने जवाब दिया।

“ये हुई न बात! क्या तुम मुझे एक सेल्फी भेज सकती हो?’’“मुझे अपना नंबर दो ताकि मैं तुमसे बात कर सकूं’’ चैत्रा लिखती है। “मेरे पास कैमरे वाला फोन नहीं है’’ श्री ने दुखी होते हुए बताया। चैत्रा ने श्री को अपना एक पुराना कैमरे वाला फोन देने का प्रस्ताव रखा। श्री को हमेशा से कैमरे वाला फोन चाहिए था। उसने पूछा, “ हम कहां मिल सकते हैं?’’

“कटपाड़ी जंक्शन रेलवे स्टेशन आ जाना’’ चैत्रा ने टाइप किया। “कब?’’ श्री ने पूछा। “जब बेंगलुरु की गाड़ी स्टेशन पर पहुंचती है’’, चैत्रा ने तय किया। तभी श्री की अक्का वहां आ जाती है। उन्होंने पीछे से चेत्रा का प्रोफाइल पिक देखा। श्री कहती है, “ये मेरी नई दोस्त बनी है।’’ “लेकिन ये तो मेरी पसंदीदा अभिनेत्री है, मधु। यह तुम्हारी दोस्त है?’’ “हां, मगर इसका नाम तो चैत्रा है।’’ अक्का जोर–जोर से हंसने लगती हैं, “यह मधु हैं, मैने इनकी सारी फिल्में देखी हैं। इनकी उम्र बहुत ज्यादा होगी।’’

“तुम कितने साल की हो?’’ श्री ने टाइप किया। “मैंने कहा ना, मैं तेरह साल की हूं, बिल्कुल तुम्हारे जितनी,’’ चैत्रा ने जवाब दिया। “इस प्रोफाइस पिक्चर में तुम्हारी बालियां कितनी सुंदर लग रही हैं!’’ श्री ने कहा। “शुक्रिया, मैंने इन्हें खुद बनाया है।’’ “अरे वाह! रविवार को जब मिलने आओ तो इन्हें जरूर पहनना।’’ “ठीक है, मगर एक शर्त पर, तुम अकेली ही आना’’ चैत्रा ने कहा “क्योंकि यह हमारी खुफिया भेंट होगी, है न!’’

तभी उसे याद आया, “सुनो चैत्रा, मैंने अपने स्कूल के आसपास कोई और स्कूल नहीं देखा।’’ मगर तब तक चैत्रा ऑफलाइन जा चुकी थी। श्री असमंजस में थी, “क्या यह झूठ बोल रही है।’’ “अक्का?’’ उसने पूछा। “हां, मेरी गुड़िया,’’ आखिर तुम्हें क्या परेशान कर रहा है?’’
“अक्का, अब मैं क्या करूं?’’

रविवार को अक्का और श्री बेंगलुरु की गाड़ी पहुंचने से बहुत देर पहले ही कटपाड़ी

जंक्शन पहुंच गए। नई दोस्त की सच्चाई का पता लगाने के लिए उनके पास एक खुफिया योजना है। ''मैं जाकर स्टेशन मास्टर से बात करती हूं ताकि वो समय पर हमारी मदद कर सकें,'' अक्का ने कहा।

बेंगलुरु से आने वाली रेलगाड़ी स्टेशन में प्रवेश कर रही थी। श्री चारों ओर देखती है। उसे याद नहीं है कि चैत्रा ने उसे स्टेशन के बाहर रुकने के लिए कहा था कि अंदर?

उधर अक्का न जाने कहां चली गई थी। वो कहीं दिख नहीं रही थी। रेलगाड़ी से कई यात्री उतरने लगे। एक भी चैत्रा जैसी नहीं लग रही थी। श्री के पिता की उम्र का एक व्यक्ति उसकी ओर आता दिखाई दिया। वो मुस्कुरा रहा था। ''हेल्लो, श्री!'' श्री हैरानी से उसकी ओर देखती है। वो इस अधेड़ आदमी को जानती तक नहीं।

''तुम्हें देखकर खुशी हुई!'' वो कहता है। ''आप कौन...कौन हैं आप–आप चै...चैत्रा नहीं हैं!'' श्री भय से हकलाई।

''नहीं, मैं चैत्रा नहीं हूं, मैं तो हूं दोस्त अंकल! मुझे छोटी लड़कियों से दोस्ती करना पसंद है। ही–ही,'' चैत्रा–नहीं–बल्कि उस अंकल ने कहा।

''ईईईईई!'' श्री जोर से चीखी। एक पल में अक्का स्टेशन मास्टर के साथ उसके पास आ पहुंची। चैत्रा–नहीं–बल्कि अंकल घबरा गए। उन्हें इस बात की कतई उम्मीद नहीं थी कि श्री अपने साथ दो वयस्क व्यक्तियों को भी ले आएगी।

अक्का ने अपना झोला घुमाकर उसके मुंह पर दे मारा। फिर जोर से दहाड़ी, ''खबरदार जो मेरी

भतीजी के पास आने की कोशिश की तुमने!''

''आह!'' वो चिल्लाया।

तभी रेलगाड़ी चल पड़ी। वह उसके दरवाजे की ओर भागा। स्टेशन मास्टर उस आदमी को धर–दबोचने के लिए तेजी से आगे बढ़ा। मगर वो यात्रियों की भीड़ में कहीं खो गया।

वे सब पुलिस थाने जाते हैं।

''आप दोनों बहादुर जोड़ी हैं!'' महिला पुलिस अधिकारी ने कहा। ''इस ढोंगी के बारे में जानकारी देने के लिए शुक्रिया। श्री आपने अपने से बड़े से इस बारे में बात करके बहुत समझदारी का काम किया। क्या आप अपने विद्यालय में इस पोस्टर को लगा देंगी? हम, बहुत जल्दी आपके विद्यालय में साइबर सुरक्षा के बारे में एक सत्र का आयोजन करना चाहेंगे।'' वे यह भी कहती हैं कि साइबर सेल के एक विशेषज्ञ द्वारा श्री के कम्प्यूटर की जांच करवानी जरूरी है। अगले ही दिन, एक साइबर अपराध अधिकारी श्री के कम्प्यूटर की पड़ताल करता है। कुछ ही घंटों के भीतर पुलिस उस आदमी को ढूंढ निकालती है जो चैत्रा बनकर धोखा दे रहा था। वे बेंगलुरु स्थित उसके ऑफिस से उसे जा दबोचते हैं और उन्हें यह जानकारी मिलती है कि वह सोशल मीडिया के कई कम उम्र के लड़के–लड़कियों से दोस्ती करने की कोशिश करता है। श्री तय करती है कि अब वह सिर्फ अपने विद्यालय के बच्चों से ही दोस्ती करेगी। वह अपने दोस्तों को इस साइबर 'मित्र' वाले डरावने रोमांच के बारे में बताने के लिए उतावली है।

ऑनलाइन सुरक्षित रहिए!

भारत में बाल सुरक्षा टेलीफोन नम्बर 1098

इंटरनेट के कई उपयोग हैं और यह एक अद्‌भुत तकनीक है। इसके दुरुपयोग से कई मुश्किलें भी खड़ी हो सकती हैं, इंटरनेट का प्रयोग सावधानी से करें। किसी भी अनजान व्यक्ति को कभी भी अपना नाम, घर का पता , स्कूल का नाम, टेलीफोन नम्बर या ई–मेल आईडी ऑनलाइन न दें। अपने माता–पिता या अभिभावकों से पूछे बगैर किसी से भी अपनी तस्वीरें साझा न करें।

पर्यटन

तख्त श्री हरमंदिर साहब

सिख पंथ के प्रथम गुरु नानक देव ने अपने जीवन दर्शन के माध्यम से लोगों को जीने का सही मार्ग बताया। नानक जी ने आमजन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने के लिए चार धार्मिक यात्राएं कीं। अपनी पहली धार्मिक यात्रा में अनेक शहरों से गुजरते हुए नानक देव पटना साहिब भी पहुंचे थे। वे यहां चार महीने तक रहे। जिन–जिन स्थानों से गुरु नानक गुजरे वे आज तीर्थस्थल का रूप ले चुके हैं। इन्हीं में एक सिखों का दूसरा सबसे बड़ा तख्त श्री हरिमंदिर साहिब भी है।

पटना साहिब में पड़े थे चरण

कार्तिक पूर्णिमा संवत 1526 विक्रमी यानी वर्ष 1469 ई. को ननकाना साहिब में पिता मेहता कालूचंद और माता तृप्ता जी के घर अवतरित श्री गुरुनानक देव के बारे में भाई गुरदास की प्रसिद्ध उक्ति है– सतगुरु नानक प्रगटिया, मिटी धुंध जग चानन होआ। अर्थात संसार से अज्ञान की धुंध समाप्त करके ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले प्रथम पातशाह ने अद्भुत कौतुक किए। गुरु नानक देव ने भारत के कोने–कोने का भ्रमण किया। 30 वर्ष की उम्र में गुरु नानक देव ने पंजाब स्थित सुल्तानपुर में अपने परिवार से अनुमति ली और मरदाना के साथ पूर्व की ओर अपनी प्रथम उदासी यात्रा के लिए प्रस्थान किए। 1506 में गुरु नानक ने पूर्व की प्रथम उदासी यात्रा के दौरान बिहार में कदम रखे। तभी वे पटना साहिब भी आए थे।

वे बिहार पहुंचने से पूर्व सैय्यदपुर (पाकिस्तान में आधुनिक इमीनाबाद), हरिद्वार, प्रयागराज और बनारस में रुके थे। गुरुनानक देव यात्रा के क्रम में बिहार पहुंचने के बाद गया के विष्णुपद मंदिर के समीप देवघाट में रुके थे। यात्रा के क्रम में रजौली, राजगीर, अकबरपुर, मुंगेर, भागलपुर समेत अन्य स्थानों पर जाने के प्रमाण हैं। हाजीपुर व लालगंज में भी नानकशाही सिख निवास करते हैं।

चार माह रहे थे गुरु नानक

कथावाचक ज्ञानी दलजीत सिंह बताते हैं कि पटना में गुरु नानक के आगमन की सूचना तेजी से फैल गई। यहां अपने धर्मोपदेश में गुरु नानक देव ने मानव के अंदर की दिव्य रोशनी की तुलना एक बेशकीमती रत्न के साथ की थी। उस समय भाई मरदाना ने पूछा कि अगर हमारे

अंदर यह दिव्य रोशनी एक दुर्लभ रत्न की तरह है तो हर कोई इसे पहचान क्यों नहीं पाता? क्यों हर कोई इसका अधिक से अधिक लाभ नहीं उठा पाता है। उस समय गुरु नानक मौन रहे। अगले दिन जब मरदाना को भूख लगी तो गुरु नानक ने बेशकीमती नग बेचकर अपना भोजन खरीदने को कहा। वह सब्जी विक्रेता, मिठाई दुकानदार, वस्त्र कारोबारी, सोनार के पास गया। वहां उसे उचित कीमत नहीं मिली। तब वह शहर से सबसे अमीर जौहरी सालिस राय के पास गया। सालिस राय ने बेशकीमती नग देखने के बदले उसे 100 रुपये दिए। हैरान मरदाना मणि और रुपये लेकर वापस गुरु नानक के पास पहुंचा तो उन्होंने रुपये रखने से मना कर दिया। जब

मरदाना ने सालिस राय को रुपये वापस किए तो जौहरी व उसका सेवक अधरखा गुरु जी से मिलने को बैचेन हो गए।

विनम्रता देख हो गए भावविह्वल

गुरु जी से मिलते ही दोनों उनके शिष्य बन गए। गुरु नानक उनकी विनम्रता से भावविह्वल हो गए और सालिस राय के मकान पर चार माह ठहरने को राजी हो गए। इसी मकान में धर्म प्रचार केंद्र स्थापित किया गया। कथावाचक ने बताया कि गुरुनानक ने ही यहां पंगत में संगत के लंगर छकने की परंपरा चालू की। इसी मकान में नौवें गुरु तेग बहादुर आए और दशमेश गुरु गोविंद सिंह का जन्म भी यहीं हुआ। यह वही मकान है, जो ऐतिहासिक रूप से सिख पंथ के पांच तख्तों में दूसरा तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब बन गया। यहां से गुरु नानक देव हरिहर क्षेत्र मेला सोनपुर भी गए थे। तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब से चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित गायघाट गुरुद्वारा पहले भगत जैतामल का पुराना घर हुआ करता था। सबसे पहले इस भूमि को गुरु नानक देव ने यहां आकर पवित्र किया। भक्त जैतामल जी गुरुजी के शिष्य बने और इस जगह को संगत का नाम दिया गया, जो बाद में बड़ी संगत गायघाट के नाम से प्रसिद्ध हुई।

स्त्रोत : दैनिक जागरण

मैं बिहार हूं

आपका अपना बिहार। अब मैं सौ साल का हो चुका हूँ। सौ साल में वैसे तो लोग बूढ़े हो जाते हैं पर मैं नहीं हुआ। क्योंकि राज्यों, देशों और सभ्यताओं की उम्र जितनी ज्यादा होती हैं वे उतने ही ताज़ा रहते हैं। इस सौ साल में मैंने काफ़ी उतार–चढ़ाव देखे हैं। मैं खुद पहले किसी का भाग था और बाद में मुझसे ही कई भाग बन गए। 22 मार्च 1912 को मैं राज्य बना। 1936 में मुझसे मेरा एक भाग अलग हुआ और उसका नाम उड़ीसा पड़ा। 1956 में केन्द्र सरकार ने एक नया क़ानून बनाया और बंगाल, बिहार और उड़ीसा के कुछ हिस्सों की अदला बदली कर दी। 2000 में मेरा एक और टुकड़ा हुआ और मुझसे झारखण्ड अलग हो गया। मैं जनक, याज्ञवल्क, गौतम, सीता, गार्गी, मैत्रेयी, चंद्रगुप्त, चाणक्य, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य, अशोक, गुरु गोबिंद सिंह, महात्माबुद्ध, महावीर, शेरशाह सूरी का बिहार हूँ। मैं गाँधी की कर्म भूमि भी रहा हूँ। बेशुमार बोलियाँ और विभिन्न भाषाएँ यहीं पली बढ़ीं। विद्यापति, दिनकर, रेणु, नागार्जुन, बेनीपुरी, अख़्तरुल ईमान जैसे बड़े कवि और लेखक भी यहीं जन्मे।

अपनी तमाम विशेषताओं को समेटे मैं सौ साल का हो गया हूँ। अब मैं अपनी नई पहचान बनाने में लगा हूँ–पढ़ता बिहार, बढ़ता बिहार, उन्नत बिहार, नित नई ऊँचाइयों को छूता बिहार।

बिहार विधान परिषद की पहली बैठक

अंजू दीदी के कक्षा में प्रवेश करते ही छात्रा सुर में गाने लगे, ''अंजू दीदी आई, नई कहानी लाई।" यह नज़ारा रोज़ ही प्राथमिक विद्यालय, दौलतपुरा में देखने को मिलता है। ख़ासकर सातवीं घंटी में बच्चे अंजू दीदी का इंतज़ार करने लगते थे। अंजू दीदी बच्चों की चहेती शिक्षिका हैं। वह रोज़ाना सातवीं घंटी में बच्चों के बीच गीत, नाटक, कहानी जैसी गतिविधियाँ नियमित कराती थीं। आज भी बच्चे उसी मूड में थे। अंजू दीदी ने बच्चों की चाहत का मान रखते हुए पूछा, "आज तुम लोग ही बताओ कैसी कहानी सुनोगे?'' शांति बोल उठी, "पापा कह रहे थे कि बिहार विधान परिषद की स्थापना सौ वर्ष पहले हुई थी।" अंजू दीदी ने कहा, "हाँ, बिल्कुल सही कहा है आपके पापा ने।" सलमा ने कहा, "आज इसी के बारे में बताइए न दीदी।" अंजू दीदी ने बताना शुरू किया, "जानते हो उस समय बिहार और उड़ीसा एक थे। 20 जनवरी 1913 को पटना में पटना कॉलेज का सभाकक्ष ख़ास तौर से तैयार किया गया था। यहाँ बिहार–उड़ीसा विधान परिषद की पहली बैठक होने वाली थी। सारे सदस्य आ गए थे। बैठक शुरू हुई। इस पहली बैठक की सदारत उस समय के बिहार के लेफ़्टिनेंट गवर्नर सर चार्ल्स स्टुअट बेली ने की थी। पता है उन्हीं के नाम पर पटना का बेली रोड है। उस समय लेफ़्टिनेंट गवर्नर यानी उप राज्यपाल को ही परिषद का सभापति मनोनीत किया गया था। उन्होंने अपने पहले भाषण में उस समय के बिहार के तीन भौगोलिक इलाक़ों बिहार, उड़ीसा एवं छोटा नागपुर की चर्चा की थी। आगे चलकर उनकी यह बात सच हुई। 1935 में बिहार से उड़ीसा अलग हुआ और वर्ष 2000 में छोटा नागपुर का इलाक़ा झारखंड के रूप में अलग हुआ। बेली ने उस समय सदस्यों को कहा था कि वे सरकार को अच्छी सलाह दें।

मैं हूँ गोल–गोल गोलघर
मुझमें रखे जाते थे अनाज भरकर
सबको अपने पास बुलाऊँ
पटना की सैर कराऊँ
गंगा के मोहक दृश्य दिखाऊँ
राजधानी की शोभा बढ़ाऊँ
बीते कल का इतिहास सुनाऊँ
खोया पल फिर से पाऊँ!

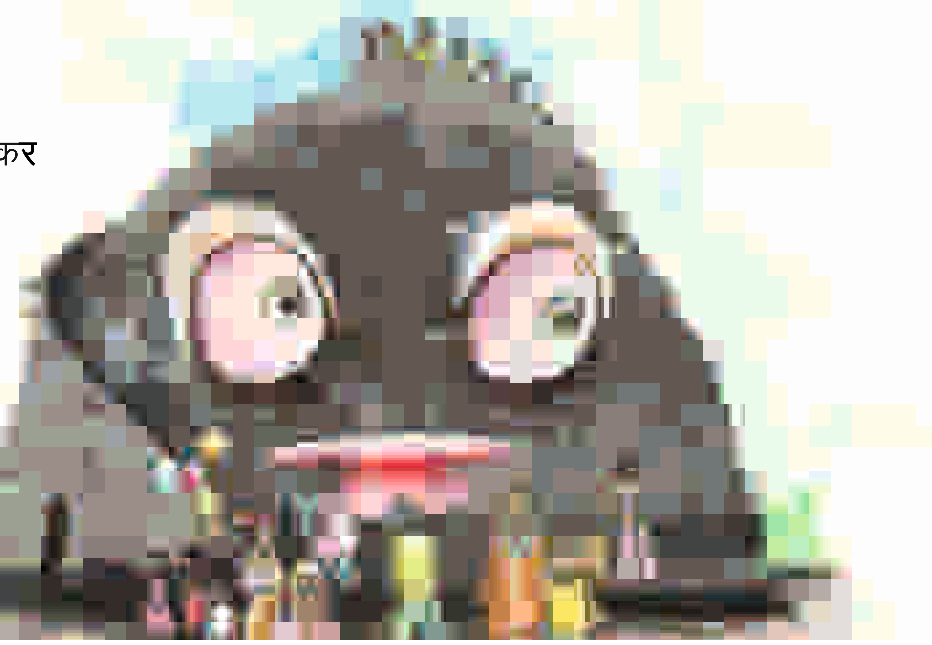

गोल–गोल गोलघर

गोलघर का निर्माण तत्कालीन गवर्नर जनरल वॉरन हेस्टिंग्स के आदेश से हुआ था। सन 1770 के बंगाल के अकाल में वर्तमान पश्चिम बंगाल, बिहार और बांग्लादेश के लोगों को बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ था और इस भयंकर सूखे में लगभग एक करोड़ लोग मारे गए थे। भविष्य में ऐसे भीषण सूखों और अन्य प्राकृतिक त्रासदियों से ब्रिटिश सेना को बचाए रखने के लिए, वॉरन हेस्टिंग्स ने बड़े–बड़े अन्न भण्डार बनवाने की योजना बनाई और उन्हीं के आदेश से पटना के इस गोलघर का निर्माण हुआ।

अर्ध–अंडाकार गुम्बदनुमा इस गोलघर का नक्शा और इसका वास्तविक निर्माण कार्य तब की ईस्ट इंडिया कम्पनी के इंजीनियर कैप्टन जॉन गार्सटिन ने किया। यह कार्य 20 जुलाई 1786 में संपन्न हुआ था।

गोलघर में लगभग एक लाख चालीस हज़ार टन अनाज रखा जा सकता है। इसके गुम्बद की ऊँचाई 29 मीटर है और इसके बीच में कोई खम्भा नहीं है। नींव के पास इसकी दीवारों की मोटाई साढ़े तीन मीटर है। इस पर चढ़ने के लिए बाहर से एक चक्करदार सीढ़ी है, जिस पर चढ़ कर मज़दूर गोलघर के ऊपर बने एक ढक्कन तक पहुँचते थे और वहाँ से अनाज इसके भीतर फेंक देते थे। इस एकत्रित अनाज को नीचे बने चार छोटे द्वारों से निकाला जा सकता था।

महात्मा गाँधी सेतु मेरा नाम
पाता बापू से जुड़कर सम्मान
पटना से हाजीपुर को जोड़ूँ
गंगा जी की लहरों पर डोलूँ
एशिया में सबसे लंबा जानो
राजमार्ग का हिस्सा मानो
तीस साल उम्र होने को आई
मेरा जन्म-दिन बताओ भाई?

महात्मा गांधी सेतु

गंगा नदी पर बने इस लम्बे पुल की गिनती हमारे देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लम्बे पुलों में होती है। पटना को हाजीपुर से जोड़ने वाले इस पुल की लम्बाई लगभग 5,750 मीटर यानि साढ़े पाँच किलोमीटर से भी अधिक है। इसके ऊपर जो बड़ा रास्ता जाता है वह राष्ट्रीय राजमार्ग 19 कहलाता है।

महात्मा सेतु 48 खम्भों पर खड़ा है। पुल पर एक तट से दूसरे तट पर आने–जाने वाले वाहनों के लिए दो अलग–अलग रास्ते बने हुए हैं। इस पर पैदल चलने वाले लोगों के लिए भी अलग से रास्ते बने हुए हैं। इसका निर्माण सन 1982 में पूरा हुआ और इसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने किया था। महात्मा गाँधी सेतु के बन जाने से बिहार के लोगों को गंगा नदी पार करने में बड़ी आसानी हुई है। दिन–रात इस पर हज़ारों सवारी और माल–वाहक गाड़ियाँ गुज़रती रहती हैं। इस पुल को गंगा सेतु के नाम से भी जाना जाता है। इस पर भारतीय डाक विभाग ने 17 अगस्त 2007 में एक डाक टिकट भी जारी किया है।

वैशाली

प्यारे बच्चों! आज मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूं। अतीत के झरोखे से बाहर आना चाहती हूं। तो सुनो....मैं हूं वैशाली। जब पूरी दुनिया में राजतंत्र था, तब मेरे ही आंगन में प्रजातंत्र–गणतंत्र ने जनता के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर शासन प्रणाली का मंत्र दिया। तब यहां सात हजार सात सौ सात सभासद होते थे। सभी एक साथ बैठकर विचार करते थे। तुम मेरे आंगन में आओगे तो अब भी राजा विशाल का गढ़ भग्नावशेष के रूप में तुम्हारा स्वागत करेगा। पास में ही है बावन पोखर जिसमें राजमहल की महिलाएं स्नान करती थीं। खरौना पोखर जिसे अभिषेक पुष्करणी के नाम से जानते हैं। इसी तालाब में लिच्छवी गणराज्य के राजाओं का राज्याभिषेक होता था। मेरे ही आंगन में वर्धमान महावीर ने जन्म लिया जो आगे चलकर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर बन गए। कुंडग्राम में उनकी जन्मस्थली है। जहां देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने स्मारक भी बनवाया है।

गौतम बुद्ध ने भी मेरे आंगन को सत्य–अहिंसा के प्रचार का माध्यम बनाया है। आज भी उनके अस्थि स्तूप यहां विराजमान हैं। बाद में, यहां एशिया का सबसे बड़ा शांति स्तूप भी बनाया गया। पास ही में विशाल अशोक स्तंभ है। एक ही पत्थर का विशाल स्तूप, स्थानीय लोग जिसे भीमसेन की लाठी के नाम से भी जानते हैं। कुएं की खुदाई में मिला चर्तुमुखी महादेव का शिवलिंग भी अद्भुत है। अब यहां विशाल मंदिर बन गया है। मेरे ही आंगन में मीरन की दरगाह भी है, जहां हिन्दू–मुसलमान एक साथ मिलकर इबादत करते हैं। यह एक अद्भुत मिसाल है।

साभार: storyweaver.org.in

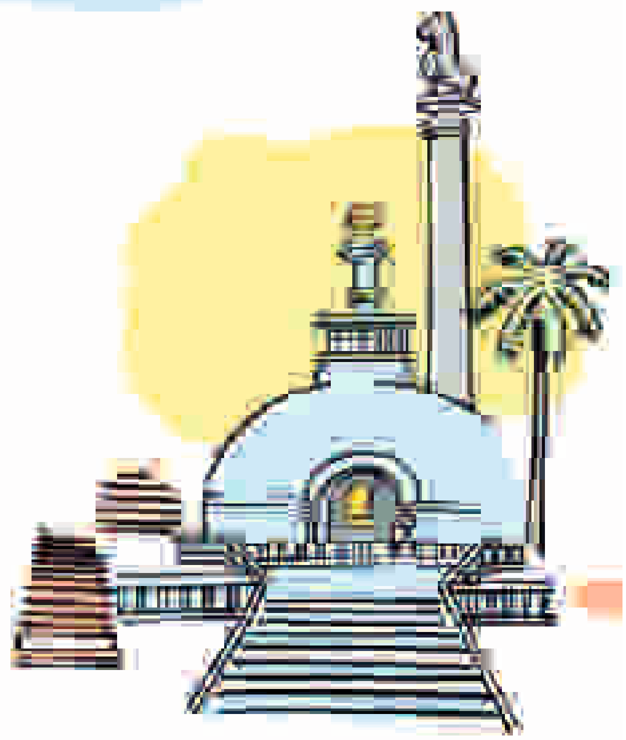

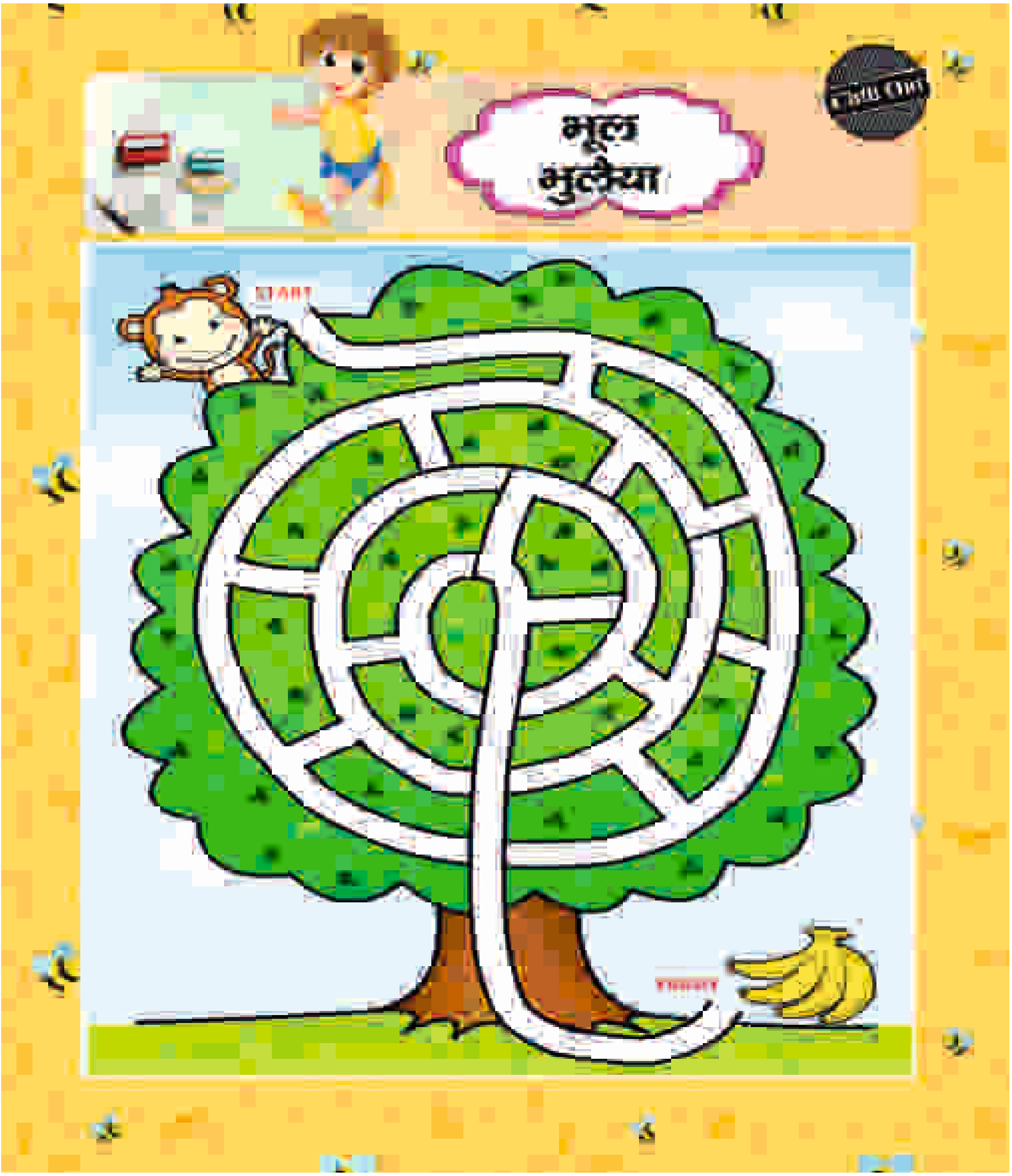

भूल भुलैया– बच्चा आपके लिए हमने नीचे एक बहुत ही आसान सी भूल भुलैया दी हुई है, जिसमें मानू मंकी को केला खाना है और वो अपना रास्ता भटक गया है। क्या आप उसे उसके खाने तक पहुंचा सकते हैं?

सात अंतर ढूँढिए

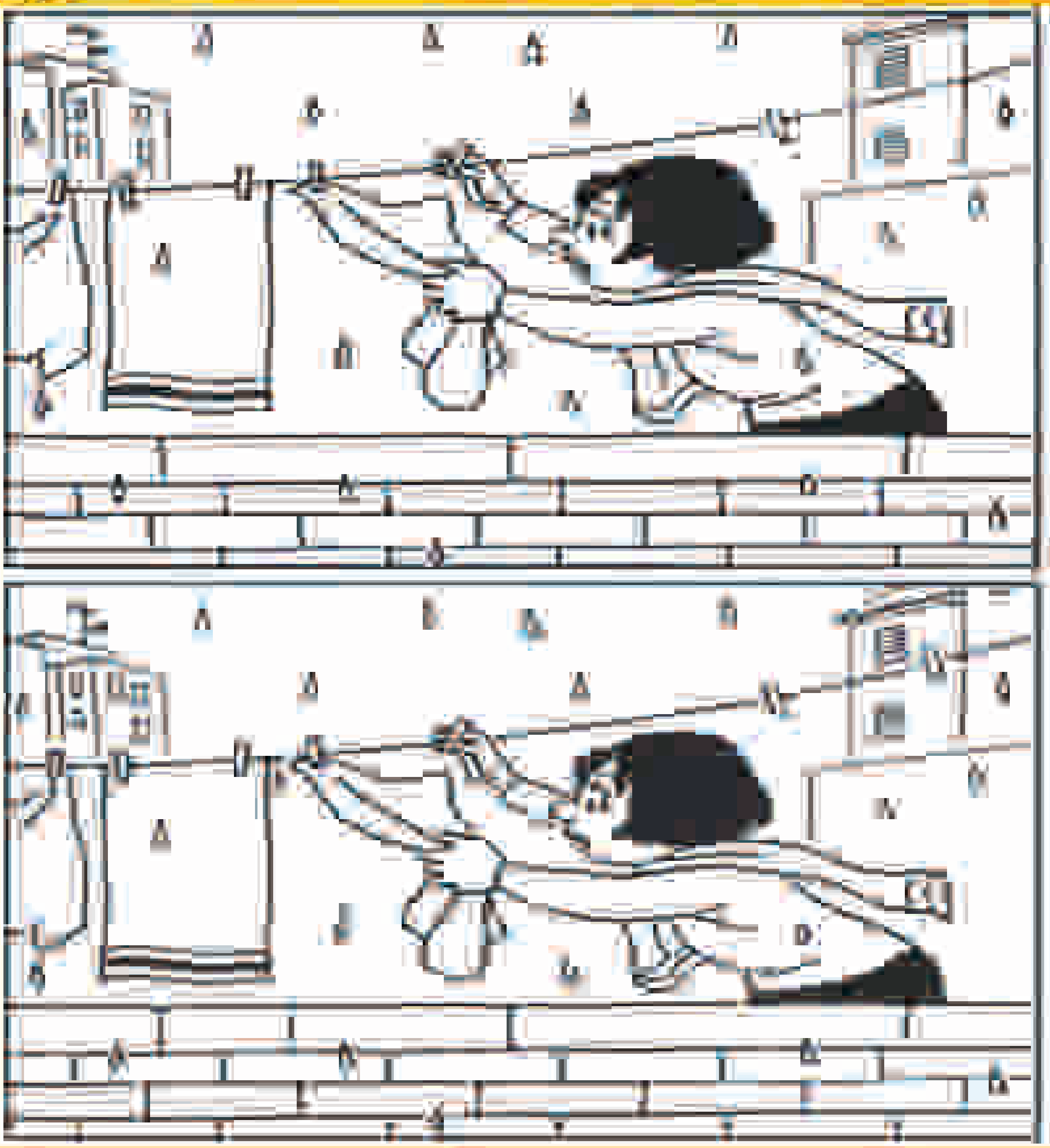

अंतर ढूँढिए– बच्चों, इस चित्र में आपको थोड़ा दिमाग लगाना पड़ेगा। चित्रकार ने आपको उलझाने के लिए बहुत सारी अलग–अलग चीजें बनाई हुई हैं, जबकि एक नजर में दोनों चित्र देखने में एक जैसे लगेंगे, लेकिन नीचे वाले चित्र में 7 गलतियाँ हमने छोड़ दी है, बस वही आपको खोज निकालनी है।

समाज में सुधार लाएंगे
मिलकर बाल विवाह, दहेज-प्रथा मिटाएंगे

बाल विवाह, दहेज उत्पीड़न से जुड़ी शिकायत के लिए महिला हेल्पलाइन पर कॉल करें।

सहो नहीं कहो 181 पर कॉल करो

शिकायत या जानकारी के लिए अपने जिला पदाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, अनुमण्डल पदाधिकारी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, स्थानीय थाना, मुखिया/सरपंच/पार्षद, महिला हेल्पलाइन 181, स्वयं सहायता समूह, आंगनबाड़ी केन्द्र पर संपर्क करें।

महिलाओं और किशोरियों का साथी 181

किसी भी फोन या मोबाईल से निःशुल्क 181 डायल करें।

अभिभावक सरपंच मुखिया मौलवी पंडित आंगनवाड़ी सेविका लड़की

लड़की वालों के साथ हैं हम, दहेज-प्रथा के ख़िलाफ़ हैं हम

महिला एवं बाल विकास निगम, बिहार द्वारा जनहित में जारी

2, दारोगा प्रसाद राय पथ, वीरचंद पटेल रोड,
पटना, बिहार 800028